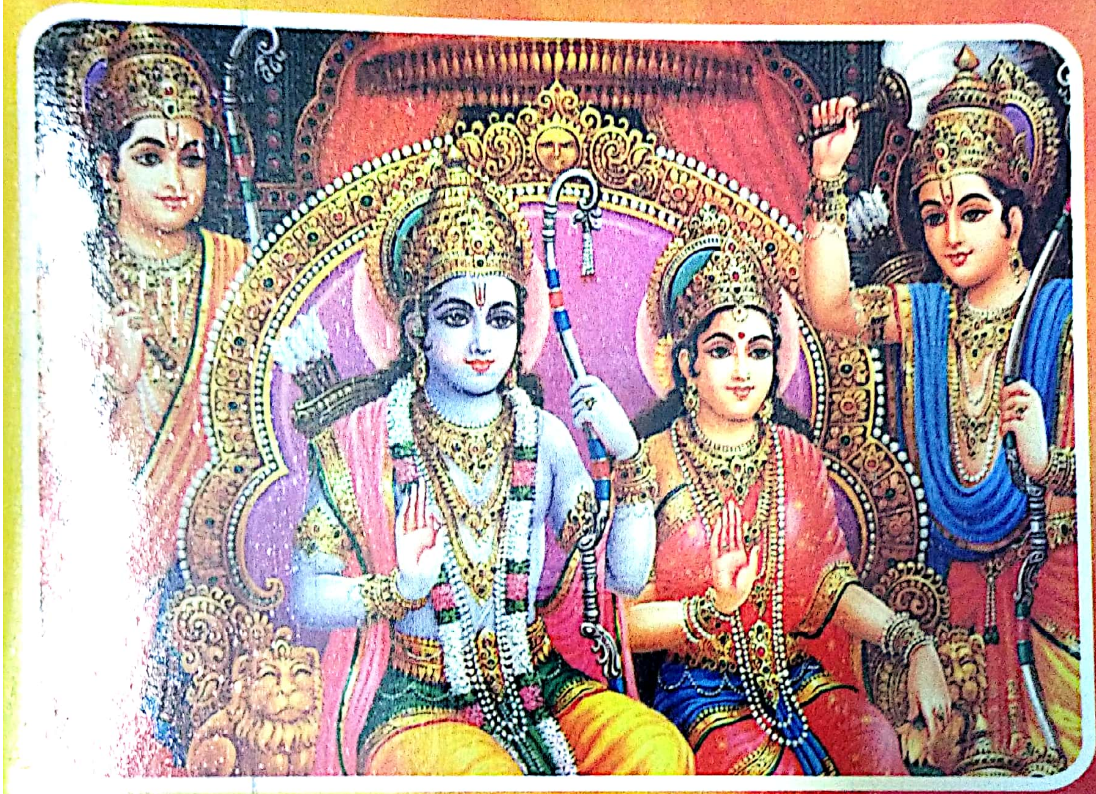
।। ओ३म् ।।

(कृण्वन्तो विश्वमार्यम्)

रामायण का वास्तविक स्वरूप



पूर्व जन्म के श्रृंगी ऋषि

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

द्वारा योग मुद्रा में प्रकथित वैदिक प्रवचनों के आधार पर प्रस्तुत

॥ ओ३म् ॥

: कृण्वन्तो विश्वमार्यम् :

रामायण का वास्तविक स्वरूप

पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी महाराज

(पूर्व जन्म के श्रृंगी ऋषि जी की आत्मा)

के योगमुद्रा में प्रकथित वैदिक प्रवचनों के आधार पर

रामायणकालीन घटनाक्रमों एवं पात्रों का सूक्ष्म परिचय

प्रस्तुति एवं संकलन

इंजी. एस. पी. सिंह
२१/६०/२, ई.सी. रोड
देहरादून (उत्तराखण्ड)

सुमन कुमार 'वैदिक'
गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ
श्रवणपुर, नजीबाबाद (बिजनौर)

सम्पादन

डॉ. अशोक कुमार आर्य
सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा

प्रकाशक

डॉ. ओ. पी. आर्य

कमला नगर, आगरा (उ.प्र.)

अनुक्रम

रामायण का वास्तविक स्वरूप

१. मुख्य पात्र- परिचय

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जीवनगाथा रामायण एवं रामचरित मानस आदि ग्रन्थों में उल्लिखित है। इन ग्रन्थों में आर्य संस्कृति व वैदिक सभ्यता के उत्कर्ष का वर्णन है। रामायण आदि ग्रन्थों में वैदिक सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, शिक्षा, धर्म, मर्यादा, नीति, राष्ट्रवाद, राजधर्म, प्रशासन व जीवन पद्धति आदि का विशद विवेचन है। पूर्व जन्म के श्रृंगी ऋषि पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के योग मुद्रा में दिये गये प्रवचनों में रामायणकाल संबंधी घटनाक्रमों एवं पात्रों का विस्तृत आख्यान है। यहां उसी के आधार पर संक्षिप्त सामग्री प्रस्तुत की जा रही है।

रामायणकाल के कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व इस प्रकार हैं-

काकभुषुण्ड- भारद्वाज गोत्रीय ऋषि रेणुकेतु तथा उनकी पत्नी रूपणा केतु के पुत्र कागोवशिष्ठया, काकभुषुण्ड महान तपस्वी थे।

लोमश- महर्षि वैशम्पायन तथा उनकी पत्नी शकुन्तला के पुत्र थे। वह महान आयुर्वेदज्ञ थे।

महर्षि वाल्मीकि- वाल्मीकि रामायण के रचियता, आयुर्वेद तथा धनुर्विद्या में पारंगत थे। त्रेताकाल में हुए।

महर्षि श्रृंगी- 184 वर्षीय ब्रह्मचारी श्रृंगी ऋषि ने कदलीवन से आकर राजा दशरथ के यहां पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था।

वशिष्ठ- राजा दशरथ के पुरोहित, गुरु, मार्गदर्शक थे।

विश्वामित्र- दण्डक वन में राम, लक्ष्मण के धनुर्विद्या गुरु थे।

महर्षि भारद्वाज- महान विज्ञानवेत्ता, रावण, कुम्भकरण, राम, लक्ष्मण, शबरी, कबंधी आदि के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक गुरु थे।

महर्षि अत्रि, माता अनुसूया- वनवास में राम के शिक्षक थे।

शबरी- रामभक्त, महाराज भारद्वाज की शिष्या थी।

सूर्पणखां (सोमतिती)- रावण की बहिन थी

गरुड़, सम्पाती- (गिद्ध मानना गलत) सहोदर भ्राता, वैज्ञानिक थे। लंका के निकट तटीय राज्यों के राजा थे, रावण से युद्ध हारने पर गरुड़ लोमश ऋषि आश्रम, तथा सम्पाती सम्भुक ऋषि आश्रम चले गये।

बाली, सुग्रीव- सहोदर भ्राता, बाली वध के बाद राम ने सुग्रीव को राजा बनाया।

मकरध्वज- हनुमान पुत्र थे, सुग्रीव की पुत्री से 48 वर्षीय हनुमान जी का विवाह संस्कार हुआ, जिसकी पुत्र जन्मते समय मृत्यु हो गयी।

हनुमान- महाराजा महीवृतकेतु की कन्या अंजना का राजा महेन्द्र के पुत्र पवन से संस्कार, अंजना, पवन से पवनपुत्र हनुमान हुए। हनुमान जी ने सूर्यविद्या को निगल लिया था, सूर्य को नहीं।

सुरसा- श्वेतम नामक राजा की पुत्री थी। उसके पास मुखमानित यंत्र था, जिससे वह मुख को छोटा, बड़ा कर लेती थी।

अंगद- बालीपुत्र, युवराज, पदस्थापन विद्या में पारंगत थे।

अहिरावण- रावण का ज्येष्ठ पुत्र, तरंगवाद के ज्ञाता, पातालपुरी (अमेरिका) के राजा थे।

इन्द्रजीत मेघनाद- ब्रह्मास्त्र, नागपाश, वरुणास्त्र के ज्ञाता इन्द्र को जीतने वाले, सुलोचना (शेषनागपुत्री) धर्मपत्नी थी।

नारायंतक- नारायंतक ने गरुणकेतु यान, कृतक यान का निर्माण किया।

अक्षय कुमार- भौतिक विज्ञान से लोकों की गणना करते थे।

रावण- पुलस्त्य के पुत्र माणिकचन्द्र केतु का पुत्र, वेदज्ञ था। उसका विशाल साम्राज्य पातालपुरी (अमेरिका), सुधतिराज्य (रूस), चीन और गंधार तथा आर्यावर्त में अयोध्या आदि कुछ राज्यों को छोड़कर सर्वत्र था।

सुखेन वैद्य (सुधन्वा)- मेघनाद की शक्ति से मूर्छित लक्ष्मण को सुलक्षणा बूटी द्वारा प्राणदान देने वाले महान वैद्यराज। उस समय सुखेन की आयु 1700 (एक हजार सात सौ) वर्ष थी।

दशरथ- अयोध्या के राजा, सगर राजा के वंशज सूर्यवंशी क्षत्रिय थे।

कौशल्या, कैकेई, सुमित्रा, दशरथ की तीन रानियां थीं तथा राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न इनके चार पुत्र थे।

सीता- मैथिल देश के राजा जनक की पुत्री तथा श्रीराम की पत्नी।

जामवन्त- (रीछ की संज्ञा गलत) वह महान वैज्ञानिक थे। हनुमान जी को सीता खोज की सलाह दी। उन्होंने राम को विषैले परमाणुओं को निगलने का यंत्र दिया था।

२. विविध उपाधियाँ

वैदिक साहित्य उपाधि से अलंकृत होने वाला जगत है। हमारे यहां इन्द्र, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, वशिष्ठ, जमदग्नि, अत्रि व दधीचि आदि उपाधियां हैं-

इन्द्र- जो एक सौ एक अश्वमेघ यज्ञ करता है, और जो संसार के सर्वत्र राजाओं को विजय करता है, वह इन्द्र बनता है।

विष्णु- जो राजा चार भुजाओं में पदम, गदा, शंख, और चक्र से अलंकृत होता है, अपनी संस्कृति का प्रसार करता है। बुद्धिजीवी प्राणी ज्ञान में, कर्म में, कथनी में, करनी में समानद होता है।

शिव- जो संकल्पवादी होता है, जिसका संकल्प महान बनता है, वह शिव कहलाता है। हिमालय के राजा शिव थे, परम पिता का नाम भी शिव है। संसार रूपी गंगा को धारण शिव ने किया है। शिव, हिमालय के राजा त्रेता काल में भी रहे थे। राजा रावण ने उनसे बहुत-सी शिक्षाओं का अध्ययन किया था। शिव विज्ञानवेता तथा आध्यात्मिकवेता थे।

वशिष्ठ- जो भी राजा अयोध्या में मनु वंश में हुए हैं, उन सबके पुरोहित का नाम वशिष्ठ रहा है। प्रथम वशिष्ठ रेणवृत्ति, द्वितीय वशिष्ठ सोमनी कहलाये। इस प्रकार इस वंश में वशिष्ठ एक उपाधि रही हैं महर्षि वशिष्ठ ने 94 वर्ष तक कोई मिथ्या उच्चारण नहीं किया। वे ब्रह्मवेत्ता बन गये। उन्होंने तीन पुत्र उत्पन्न किये। इसके पश्चात् वे सुप्रजन्य ब्रह्मचारी रहे। वन में तप करते दिन में वनस्पति पान क़रते, सायंकाल वायु का आहार करते थे। वशिष्ठ उस ऋषि को कहा जाता है, जो ब्रह्मवेत्ता है,

शान्ति प्रिय है, मान-अपमान से रहित है।

भारद्वाज- ज्ञान और विज्ञान में परायण है, वह भारद्वाज उपाधि पाता है। ज्ञान और विज्ञान में रत रहने वाला भारद्वाज एक वंश माना गया है।

ब्रह्मवेत्ता काक भुषुण्ड और लोमश मुनि- महर्षि वैशम्पायन की पत्नी शकुन्तका थी। शकुन्तका के पुत्र का नाम महर्षि लोमश हुआ, और भारद्वाज गौत्रिय ऋषि रेणुकेतु तथा उनकी पत्नी रूषेणकेतु के पुत्र का नाम कागो वशिष्ठ या काक भुषुण्ड था। दोनों को माता-पिता ने महान तपस्वी बनाया। त्रेता युग में काक भुषुण्ड जी महान आयुर्वेदज्ञ थे। वह जब भगवान राम के द्वार पर आये, तो उनकी आयु 684 वर्ष की थी। उन्होंने 400 वर्ष तक आयुर्वेद पर खोज कीं गरुड़, काक भुषुण्ड ऋषि थे, पक्षी नहीं। काक भुषुण्ड जी ने चन्द्रमा पर अनुसंधान कर, चन्द्रायणकृत पोथी का निर्माण किया। इन्होंने सविता नामक पोथी, जिसमें चन्द्रयानों का विज्ञान वर्णन लोमश मुनि की आज्ञा से किया। काक भुषुण्ड एवं लोमश मुनि ने रावण का अश्वमेघ यज्ञ कराया था।

रामायण के प्रणेता- महर्षि वाल्मीकि- महर्षि वाल्मीकि त्रेताकाल में हुए। बाल्यकाल में उनका जीवन त्रुटिपूर्ण रहा। युवावस्था में लोगों को कष्ट दिये। बाल्यकाल में उनका नाम रत्नाकर था। नारद जी की कृपा से उन्होंने तप किया। वह महान प्रकाण्ड बुद्धिमान ब्रह्मज्ञानी तत्ववेता बने। ऋषि वाल्मीकि ने दशरथ से लेकर राम तक के जीवन चरित्र का पोथी रूप में निर्माण किया। महर्षि वाल्मीकि आयुर्वेद और धनुर्विद्या में पारंगत थे। महाराजा रेणकेतु के 50 वर्ष तक पुरोहित रहे। वे अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या शिक्षालय में देते रहे।

३. राम के पूर्वज

राष्ट्रनिर्माता मनु- आदि मनु महाराज ने महर्षि विभाण्डक महर्षि पारा आदि के परामर्श से वेदानुसार धर्म की रक्षा हेतु अयोध्या राष्ट्र का

निर्माण किया, वर्ण व्यवस्था स्थापित की, शिक्षालयों में आचार्य बुद्धिमान को ब्राह्मण; वाणिज्य में निपुण को वैश्य; दूसरों की रक्षा करने वाले को क्षत्रिय; जो इन तीनों प्रकार की विद्या को प्राप्त न कर सके, उसे शूद्र की उपाधि दी जाती। दशरथ के पिता, अज; अज के पिता रघु; रघु के पिता दिलीप; दिलीप के पिता; भगीरथ; भगीरथ के पिता कद्दीप; कद्दीप के पिता विरुत; विरुत के पिता सुखमंजस; सुखमंजस के पिता महाराजा सगर थे। दशरथ के पुत्र राम; राम के पुत्र लव-कुश हुए। लव-कुश के सुधति; सुधति के मनधुत; मनधुत के पुत्र कुशधुन नाम के राजा हुए। यहां आकर यह प्रणाली समाप्त हो गयी।

४. रघु से दशरथ तक

महाराजा रघु ने वानप्रस्थ लेकर, अपने पुत्र अज को शिक्षा दी। अज के पुत्र दशरथ हुए, दशरथ के काल में रघुकुल प्रणाली में त्रुटियां आयीं, वह ऐश्वर्य में संलग्न हो गये। दशरथ की तीन पत्नियां थीं। रावण ने रघु के विशाल साम्राज्य पर अपनाआधिपत्य जमा लिया था। छोटा सा राज्य अयोध्या का रह गया था। रावण राज्य में दुराचार अधिक था। चरित्र नहीं था।

माता कौशल्या- माता कौशल्या के गुरु तत्व मुनि 284 वर्ष के अखण्ड ब्रह्मचारी थे। कौशल्या ने दर्शनों का अध्ययन किया। उन्होंने गुरु जी से एक महान बालक को जन्म देने की इच्छा व्यक्त की, जो संसार से आततायियों का नाश करे, धर्म की पताका फहराए। रावण को यह पता होने पर उसने कौशल देश के राजा से कहा कि अपनी पुत्री हमें अर्पित करो, हम इससे संस्कार तो नहीं कराएंगे, किंतु इस कन्या को बन्दी कर रखेंगे। कौशलेश ने अपनी पुत्री कौशल्या को रावण को दे दिया, रावण ने उस कन्या को समुद्र के मध्य एक टापू पर दुर्ग बनाकर यंत्रों में ओतप्रोत कर दिया। राजा दशरथ जब रानी कैकेई के साथ कुबेर को युद्ध में परास्त कर लौट रहे थे, तो मार्ग में समुद्र में बने दुर्ग पर वाहन सहित पहुंच कर,

उस यंत्र को लाये, जिसमें कौशल्या बन्द थी। कुछ समय बाद कौशल्या का संस्कार राजा दशरथ के साथ हुआ, रघु परम्परानुसार कौशल्या राष्ट्र-गृह में पहुंची। राजा दशरथ के तीन संस्कार कराने पर भी पुत्र नहीं हुआ, अत: ऋषि-मुनियों ने पुत्र-यज्ञ कराया।

५. पुत्रेष्ठि याग

राजा दशरथ माता अरुन्धति और वशिष्ठ मुनि के पास गये। वशिष्ठ मुनि ने उन्हें 184 वर्षीय ब्रह्मचारी महर्षि श्रृंगी से पुत्रेष्ठि यज्ञ कराने को कहा। वशिष्ठ जी के इस यज्ञ को कराने की असमर्थता प्रकट करने पर महर्षि श्रृंगी को कदली वन से लाया गया। यज्ञशाला की रचना, अयोध्या में महर्षि वायु मुनि महाराज और अंगिरस सब विद्यमान थे। नाना प्रकार की वनस्पतियों से उन्होंने पुत्रेष्ठि यज्ञ चरु बनाया। गोदुग्ध और कुछ वृक्षों का रस लेकर, तथा वनस्पतियों के साकल्य से यज्ञ सम्पन्न किया। आयुर्वेद का महान पण्डित ही पुत्रेष्ठि यज्ञ कराने का अधिकारी होता है, क्योंकि वह जानता है कि कौन-कौन सी औषधियों का पान कराने से यजमान के रोग दूर हो सकते हैं। पुत्रेष्ठि यज्ञ में गुड़केशम सुधनकेतु और मरीचिका नामक औषधियों को खरल किया गया, उसको गोघृत और गोदुग्ध द्वारा समिधा वाली अग्नि में तपाया तथा इस औषधि को माताओं को प्रदान कर, उनके गर्भस्थल की अशुद्ध ग्रन्थियों का रोग ठीक किया, वह धारया बन गयी। राजा दशरथ का भी निदान किया गया।

पुत्रेष्ठि यज्ञ में आक की, शमी की, जटामासी त्रिकाष्ठ, चन्दन अनुभूत चन्दन, अनीकृत की समिधा होती है। समिधाओं का विधान किया जाता है, कि यज्ञशाला में उन समिधाओं को कैसे प्रतिष्ठित करना है। जैसे मेरे उस चैतन्य देव ने माता की योनि बनायी है, उसी प्रकार की यज्ञशाला बनानी है। इसका निदान करने हेतु मैंने तीनों रानियों को एक पंक्ति में एकत्रित किया। उस समय मैं यह नहीं जानता था कि पुत्रीवत कैसी होती है। मैंने आयुर्वेद के सिद्धांत से कहा कि तुम मुझे अपनी योनियों का

दिग्दर्शन कराओ। यह लज्जा का विषय था, परन्तु महर्षि वशिष्ठ के कथन से उन सब पुत्रियों ने मुझे अपना दिग्दर्शन कराया। आयुर्वेदिक पंडित को इसमें दोषारोपण नहीं होता। इस प्रकार मैंने उनकी योनियों को जाना, तीन ही प्रकार की यज्ञशालाएं बनायी गयीं। एक ही यज्ञशाला में तीन प्रकार का भाव बनाना पड़ा। तीनों रानियों व राजा दशरथ का निदान किया गया। उन्होंने एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पृथ्वी का आसन बनाया। पीपल का पंचांग बनाकर, उसके साथ अष्टांग का पान कराया। अधुधूत और सिंवानी अंचारी निधिनाश्चा आधुरेति स्वर्णानुअनात इन सभी को बराबर मात्रा में लेकर सोम रस बनाकर चालीस दिन तक पान कराके माता का गर्भस्थल पवित्र कराया।

महर्षि वेत्ति अंगिरा मुनि उस यज्ञ में रहे। अंगिरा मुनि ने नाना प्रकार के साकल्यों को लेकर शृंगी ऋषि की सहायता से उस यज्ञ में औषधियों का पात बनाया, उस पात को उन देवियों को प्रदान कर दिया।

यज्ञ की दक्षिणा-

यज्ञ की समाप्ति पर राजा ने अपनी शक्ति के अनुसार गायों एवं द्रव्य प्रदान किये। कौशल्या ने दक्षिणा हेतु ऋषियों से पूछा, तो ऋषियों ने द्रव्य लेने से मना किया एवं कहा कि आपसे संकल्प चाहते हैं कि तुम्हारे गर्भ से ऐसे बालक का जन्म होना चाहिए, जो राष्ट्र एवं समाज को ऊंचा बनाए और संसार से रूढ़ि समाप्त करे, जिसकी आभा चन्द्रमा की तरह शीतल और अमृत बहाने वाली हो, एवं महापुरुषों की रक्षा करे। माता कौशल्या ने स्वीकार कर लिया और उन्होंने कहा कि तपस्या में जीवन व्यतीत करूंगी और राष्ट्र का अन्न ग्रहण नहीं करूंगी। गृह में वास कर, स्वयं अन्न एकत्रित करना, जो स्वयं कला कौशल करके प्राप्त करती, उसी को ग्रहण करती। उनके मस्तिष्क में महान तरंगों का जन्म होने लगा।

६. गर्भवती कौशल्या का तप

माता कौशल्या सोमलता को वनों से लाकर अणिमा प्रभान को

खरल करके पान करती, जिससे शिशु महान पवित्रत्व को प्राप्त होता।

गर्भवती कौशल्या ऋषि आश्रम में-

अंगिरस गोत्र में एक ऋषि थे, उनसे कौशल्या ने कहा आपने मेरा पुत्रेष्ठि यज्ञ किया और गर्भस्थल में शिशु आ गया है, अब मैं क्या करूं? उन्होंने श्रृंगी ऋषि से प्रश्न करने को कहा। श्रृंगी ऋषि ने उन्हें त्याग तपस्या वाले अन्न को ग्रहण करने को कहा। उसी अन्नादि से माता के गर्भ में पिण्ड का निर्माण होता था। ऋषि ने प्राण को व्यान में, और व्यान को समान में प्रवेश कराने, समान को उदान में परिणित कर, चित्त के मंडलों का दर्शन करने को कहा, ये युक्तियां देवी को परिणित करायीं। कौशल्या ने पन्द्रह दिन ऋषि आश्रम में रहकर प्राण विद्या को जाना। स्वयं कला-कौशल से उत्पन्न अन्नादि पान करती फल-पुष्पों के द्वारा निर्वाह कौशल्या राष्ट्रीय अन्न को रजोगुण और तमोगुण से सना हुआ होने के कारण ग्रहण नही करती थी। राजा दशरथ, गुरु वशिष्ठ तथा माता अरुन्धती के आग्रह को भी श्रृंगी ऋषि द्वारा बताए गये संकल्प के कारण नहीं माना। वह राष्ट्र का वस्त्र भी धारण नहीं करती थीं। माता कौशल्या ने बारह वर्ष तक गायत्री का पठन-पाठन किया।

७. पुत्रों का नामकरण

चारों पुत्रों के जन्म के बाद राजा दशरथ के पुरोहित महर्षि वशिष्ठ ने महर्षि काक भुषुण्ड, महर्षि लोमश, महर्षि वृतकेतु, महर्षि विभाण्डक, महर्षि श्रृंगी, महर्षि वैशम्पायन आदि महर्षियों ब्रह्मवेत्ताओं, ब्रह्मचारियों, महाराजाओं के साथ नामोकरण उत्सव यज्ञ किया। राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न नाम दिये। माता अरुन्धती ने भी बच्चों को आशीष दिया। महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विभाण्डक, महर्षि लोमश, महाराज शिव, महर्षि वैशम्पायन ने राष्ट्रोन्नति, सद्विचार, सदाचार आदि पर उद्गार प्रकट कर अशीर्वाद दिया। तत्पश्चात राजा दशरथ ने सभी ऋषि-मुनियों तथा राष्ट्रवेत्ताओं का आभार प्रकट किया।

८. शिक्षाकाल

माता कौशल्या प्रात:काल याग करती, उन्होंने तीन वर्ष के राम को यज्ञ, वेदध्वनि द्वारा करना सिखाया। भगवान राम आठ वर्ष की आयु में वेदों को ध्वनि रूप में गाते हुए यज्ञ करते। गुरु वशिष्ठ के आश्रम में यज्ञ प्रक्रिया सीखी तथा षोडश कलाएं जाग्रत कीं। राम बारह कलाओं को जानते थे। वशिष्ठ के आश्रम में राजा के पुत्र, ऋषि-पुत्र तथा जनसामान्य के पुत्र साथ-साथ पढ़ते, तथा साथ-साथ भोजन करते। महर्षि व्रतकेतु के पुत्र शोभनी ने गुरु वशिष्ठ से दोनों के समावेश का प्रश्न किया कि यह कैसे संभव है। वशिष्ठ जी ने कहा कि राष्ट्रवादी भी राष्ट्र में अनुशासन चाहता है तथा ऋषि-मुनि भी पवित्र साम्राज्य चाहते हैं, यही दोनों का समावेश है।

वशिष्ठ द्वारा राजा दशरथ का मार्गदर्शन-

राजा दशरथ ने महर्षि वशिष्ठ से पूछा कि राष्ट्र का पालन कैसे करूं? वशिष्ठ ने कहा कि राष्ट्र का या किसी का पालन तब हो सकता है, जब उसके द्वारा त्याग होगा और आत्मिक ज्ञान होगा। मुनि वशिष्ठ ने सभा की, तथा विश्वामित्र को अयोध्या में प्रवेश कर रघुवंश के राजकुमारों को ऊंचा बनाने, विलासिता तथा आत्मा की रूढ़ि को समाप्त कर, राम को ऊंचा बनाने का विचार बनाया। महर्षि विश्वामित्र ने याग की रचना की। याग से रूढ़िवाद को समाप्त करने लगे।

विश्वामित्र द्वारा दशरथ-पुत्रों को शिक्षा-

त्रेता युग में महर्षि विश्वामित्र ने दण्डक वन में चार वर्ष तक धनुर्विद्या का अध्ययन करा कर, परीक्षा करायी। इकहत्तर ब्रह्मचारियों ने धनुर्विद्या प्राप्त की। महर्षि विश्वामित्र ने बताया कि राम और लक्ष्मण धनुर्विद्या में परायण हैं, परन्तु भरत और शत्रुघ्न दूसरों की आज्ञा पालन करने के साथ ब्रह्मविद्या में विशेष हैं। भरत राष्ट्र का पालन करने में तथा त्याग में परायण हैं, उनकी त्याग प्रवृति है, वह संग्राम योग्य नहीं हैं। शत्रुघ्न पृथ्वी के मापदण्ड में विशेष हैं।

विश्वामित्र का प्रथम विषय ब्रह्म का रहा है, त्यागपूर्वक, नम्रतापूर्वक अध्यापन कार्य करने के साथ ब्रह्मवेत्ता थे। महर्षि वशिष्ठ ज्ञान और प्रयत्न में रत रहते थे। माता अरुंधती वेदपाठी तपस्या तथा स्वत: ब्रह्मवेत्ता बन लोक-लोकान्तरो को निहारती और उनमें गमन करती थी। विद्यालय में विद्यार्थी आचार्यों के संरक्षण में शारीरिक बौद्धिक शिक्षाएं प्राप्त करते। कहीं वे परमाणुवाद में जाते, कहीं अणुवाद में रत होते, सर्वत्र विज्ञान की शिक्षा पाते। हर वर्ष परीक्षा होती। विश्वामित्र चारों राजकुमारों सहित ब्रह्मचारियों को धनुर्याग का अभ्यास कराते। अस्त्रों-शस्त्रों में अभ्यस्त होना, अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण करना, उनका प्रहार करना। उनके ब्रह्मचारी प्रात:कालीन याग करके शिक्षा प्रारम्भ करते। शिक्षा क्या थी- परमाणुओं का मिलान करना और अग्नि तत्व को जानना, गुरुत्व को उसमें मिश्रण करना, तरल तत्व की उसमें पुट लगाना। ये तींन परमाणु कहलाते हैं और उनको वायु में गति देना और आकाश में भ्रमण करना।

विश्वामित्र आश्रम में भारद्वाज ऋषि-

महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां विशाल से विशाल यंत्र थे और वह विशाल से विशाल ज्ञान और विज्ञान आध्यात्मिकवाद की एक भूमिका थी। उन्होंने राम को कहा कि सबसे पहले तुम विज्ञानवेत्ता बनो और अणु-परमाणु पर खोज करो।

भारद्वाज महर्षि को विश्वामित्र, वशिष्ठ ने बताया कि राम-लक्ष्मण प्राण विद्या में परायण हैं। वे अस्त्र-शस्त्रों की प्रतिभा को जानते हैं। मैंने उन्हें एक सोमतिती नाम की रेखा का वर्णन कराया है, जो वेद के एक मंत्र में आती है। मंत्र- ''सोमब्रहीवृत रत: स्वाहा वेतु सम्भव ब्रहे वाच प्रवाणाम अग्न ब्रहे रेत अस्वति।'' राम-लक्ष्मण ने उसे अच्छी तरह समझा है। किसी काल में उददालक गोत्र के शिकामकेतु मुनि के यहां भी इस रेखा का अध्ययन हुआ था। इस रेखा की विशेषता यह है कि एक परिक्रमा रूप में यह रेखा बद्ध हो जाए, तो इस परिक्रमा के आन्तरिक जगत में रहने वाला मानव सुरक्षित रहता है, और बाह्य से जो दुरिता भाव

से आता है, उसका विनाश हो जाता है। वह इस रेखा के पास आते ही भस्म हो जाता है। ऐसी सोमतिती रेखा का मैंने वर्णन कराया है। उसको लक्ष्मण ने परायणता से जान लिया है। शत्रुघ्न ने उसके ऊपर विचार नहीं किया, उसका मन स्थिर नहीं रहा। भरत ने रेखा को कठिन जानकर छोड़ दिया, और भी ब्रह्मचारियों ने इसे अवहेलना युक्त कहा। वर्णिति नाम के ब्रह्मचारी ने इस रेखा को जानने का प्रयास किया है। ब्रह्मास्त्र, अग्नास्त्र, वरुणास्त्र में राम बड़े परायण हो गये हैं। भारद्वाज जी ने राम-लक्ष्मण को अयोध्या राज्य की परिक्रमा करने को कहा, जिससे आततायी रावण का आक्रमण का सामना हो सके। रावण राज्य में रूढ़िवाद आ गया है, उसने महाराजा सम्पाती के राष्ट्र को अपना लिया है, तथा सम्पाती और उनके विधाता गरुड़ को यंत्रों द्वारा अंतरिक्ष में प्रवाहित कर दिया है। गरुड़ जी तो एक स्थान पर अपना निवास करने में लगे हैं, और सम्पाती समुद्र तट पर शान्त मुद्रा में विराजमान हो गये हैं। उसके राष्ट्र का पालन अक्षयकुमार करते हैं। इस अयोध्या राज्य पर उसका आक्रमण न हो जाए, महर्षि विश्वामित्र जी ने इस वाक्य को स्वीकार कर लिया।

९. लंकाधिपति रावण

रावण का जन्म-

महात्मा पुलस्त्य के पुत्र मणिकचन्दकेतु के यहां चार सन्तानों का जन्म हुआ। पहली वरुणकेतु, द्वितीय विभीषण, तृतीय कुम्भकरण और चतुर्थ एक पुत्री का जन्म हुआ।

रावण की शिक्षा-

महात्मा पुलस्त्य तीनों पुत्रों को लेकर ऋषि शुकदेशवन्त के आश्रम में पहुंचे ऋषि ने तीनों ब्रह्मचारियों के मस्तिष्क का अध्ययन किया, और बताया कि सबसे बड़ा पुत्र राजा बनेगा, परन्तु उसके चरित्र में सूक्ष्मता होगी। द्वितीय पुत्र साधारण कर्मकाण्डी रहेगा, यह महानता वाला होगा। तीसरा पुत्र विज्ञान में रमण करने वाला होगा, बहुत बड़ा वैज्ञानिक बनेगा।

तीनों ब्रह्मचारी शुकदेशवन्त ऋषि के आश्रम में शिक्षा-दीक्षा लेने लगे।

वरुण से दशानन-

रावण को बाल्यकाल में ब्रह्मा जी ने भी शिक्षा दी थी। ब्रह्मा ने वरुण को दसों दिशाओं का ज्ञान दिया। रावण दिशा-ज्ञान में निपुण हो गया, अतः ब्रह्मा ने उसे दशानन नाम दिया। आधुनिक जगत में दस शीश वाली बात उपहास है। रावण ब्राह्मण, महान, प्रकाण्ड पंडित, बुद्धिमान थे।

नाभि में अमृतकुण्ड-

ब्रह्मचारी वरुण सुशील वेदपाठी, वैज्ञानिक बुद्धिमान था। उसकी आत्मा पवित्र थी। हृदय निर्मल थां आयुर्वेद के नाड़ी विज्ञान का ज्ञाता था, मनुष्य-शरीर के नाभि-चक्र, जिसमें लगभग दो करोड़ नाड़ियां हैं। एक सुषुम्ना नाम की नाड़ी है, जो मस्तिष्क से चलती है और उसका संबन्ध नाभि-चक्र के अग्रभाग में होता है। वह उसे जानता था। सुधित नाम की नाड़ी ब्रह्मरन्ध्र से चलती है, उसका संबन्ध नाभि से होता है। पूर्णिमा की रात को सुधित नाम की नाड़ी का संबन्ध मस्तिष्क से होता हुआ सीधा चन्द्रमा से हो जाता है। चन्द्रमा की क्रान्ति को वह नाड़ी पान करती है और नाडियों के मंध्य स्थान में अमृत इकट्ठा होता रहता है। इससे मानव जीवन बलिष्ठ होता है, और मृत्यु से भी विजयी बन जाता है, उसकी आयु अधिक हो जाती है। क्योंकि वह आनन्द रूपी अमृत नाभिस्थल में होता है। इसी को नाभिस्थल में अमृतकुण्ड कहते हैं।

रावण का विवाह-

राजा महिदन्त चक्रवर्ती राजा थे। पातालपुरी, रोहिणी, गंधार राज्य उनके अधीन थे। इनका राजकोष लंका में था। महाराज शिव उनके सहायक रहते थे। पुलस्त्य एक स्वर्णगृह में विश्राम करते थे। कुछ समय बाद लंका का स्वामी कुबेर बन गया, पातालपुरी को कुधित रुष्ठित नामक राजा ने अपना लिया ओर मार्तिक राजा ने सोमाधित राज्य ले लिया। राजा महिदन्त का छोटा सा राज्य रह गया। उनके कोई पुत्र नहीं था, एक कन्या उत्पन्न हुई। अपनी पत्नी सुरेखा के परामर्श से उसे अपने कुलपुरोहित 284

वर्षीय तत्वमुनि महाराज से शिक्षा दिलायी। वह भौतिक यज्ञ और कर्मकाण्ड में प्रकाण्ड हो गयी। वह वेदों का हर समय स्वाध्याय करती। क्षत्रियकुलीन कन्या में ब्राह्मणकुलीन गुण सम्पन्न हुए।

विवाह संस्कार हेतु राजा ने पुलस्त्य ऋषि के अड़तालीस वर्षीय पौत्र आदित्य ब्रह्मचारी, जो वेदों का प्रकाण्ड विद्वान था, से निवेदन किया, अत: वरुण के मां-बाप ने संबन्ध स्वीकार कर लिया। नक्षत्रों के अनुकूल समय पर महिदन्त ने ब्रह्मचारिणी अपने वेदमंत्र बोलकर, ब्रह्मचारी अपने वेदमंत्र बोलकर बड़ी आशा नन्दी से संस्कार समाप्त हुआ। वरुण ने कुबेर को हराकर लंका को जीत लिया। वरुण ने राजा महिदन्त अपनी लंका को स्वीकार करने को कहा कि जिसे महिदन्त ने रावण को यह कहकर लंका को तुमने विजय किया है, अत: मैं इसे तुम्हें अर्पण करता हूं। राजा महिदन्त की कन्या, जिसका संस्कार रावण से हुआ, उसका नाम मन्दोदरी था। रावण महादानी को कहा जाता है। व्याकरण व मीमांसा की दृष्टि से रावण बुद्धिमान व विज्ञानवेत्ता को कहते हैं, यह कोई अपशब्द नहीं है।

कुक्कट मुनि का रावण राज्याभिषेक के लिए इन्कार- ब्रह्मवेत्ता कुक्कट मुनि महाराज से महात्मा पुलस्त्य ने राज्याभिषेक करने के लिए कहा, उन्होंने इनका राज्याभिषेक करने से मना किया, क्योंकि वह राष्ट्र का अधिकारी नहीं है। यह महान जिज्ञासु नहीं है। केवल अपना नामोकरण करने वाला है। उसे अभिमान होगा, जिससे धर्म और मर्यादा नष्ट हो जाएगी। उन्होंने पुलस्त्य को भी कुटुम्ब का मोह छोड़ तप करने की सलाह दी। कुक्कट मुनि ने कहा कि मैं इसका राज्याभिषेक नहीं कर सकूंगा, क्योंकि इसकी एक नाड़ी कहती है कि इसको अधिकार नहीं है। दूसरी नाड़ी कहती है कि यह विज्ञानवेत्ता है, और तीसरी नाड़ी यह कहती है कि आगे चलकर यह अभिमान में परिणित हो जाएगा। प्रभु मैं ऐसे राजा का राज्याभिषेक नहीं कर पाऊंगा। अन्त में पुलस्त्य ने महात्मा भुंजु से सबकी इच्छा लेकर रावण का राज्याभिषेक वेदमंत्रों से कराया।

लंका की राज्य प्रणाली- राजा रावण से पूर्व लंका के महाराज

कुबेर थे, महाराजा कुबेर से पूर्व महाराजा महिदन्त थे, महिदन्त से पूर्व महाराज शिव थे। जब रावण राजा बने, तब महाराजा रघु का जितना राज्य था, उस पर रावण ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और राजा दशरथ के पास सूक्ष्म-सा अयोध्या का राष्ट्र रह गया था।

१०. रावण-समाप्ति की ऋषि-योजना

राजा रावण के राज्य में सूर्य न तो अस्त होता था, न उदय होता था। इतना विशाल राज्य था। धनवान था, किंतु राज्य में आततायीपन आ गया था, अतः रावण राज्य का अन्त करने हेतु ऋषियों ने विचार किया।

ऋषियों की महासभा-

अयोध्या के भयंकर जंगल में एक सभा हुई। महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का आश्रम था, जिसमें सभा हुई थी। देवर्षि नारद, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज, ब्रह्मचारिणी कबन्धी, गार्गेपथ्य, चक्राणि गार्गी, महाराज अश्वल और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, महाराजा दिग्ध, महर्षि कुक्कट आदि ऋषि विद्यमान थे। विचारणीय विषय समाज़ से रावण के आततायीपन को कैसे समाप्त करें, था। रावण ने इन्द्र को जीत लिया था, त्रिपुरी में उनके पुत्र नरायन्तक राजा थे। पातालपुरी में अहिरावण राज्य करते थे। और भी राष्ट्र उनके अधीन थे। महाराजा शिव उनके वंश के पूज्य गुरु थे। शिव ने अस्त्रों-शस्त्रों की शिक्षाएं प्रदान की थीं। भारद्वाज मुनि ने भी पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। विचार विनिमय के बाद ऋषि-मुनियों ने महर्षि विश्वामित्र से कहा कि राम-लक्ष्यमण को धनुर्याग से महान बनाओ, उन्हें बलिष्ठ बनाओ, वैज्ञानिकता से अस्त्र-शस्त्रों से युक्त करो।

महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि रावण के वंश को मैंने शिक्षा दी है। कुम्भकरण बारह-बारह वर्ष तक विज्ञान की शिक्षा लेकर गये। वह इतने अनुसंधानवेत्ता हैं कि छः माह तक वैज्ञानिकों को शिक्षा देते हैं। रावण के दुष्चरित्र को समाप्त करने हेतु विवेकी पुरुष होने चाहिए।

वेदपाठी विवेकी जन राष्ट्र को ऊंचा बना सकते हैं। मेरी विज्ञानशालाओं में जितने भी वरुणास्त्र हैं, उनको मैं राम को प्रदान कर सकता हूं। महाराज शिव ने रावण की सहायता न करने की सहमति दे दी। महाराज शिव ने बताया कि मैंने गणेश, पार्वती की सहकारिता से एक यंत्र निर्माण किया है। जब रावण शत्रु से संग्राम करेगा, तो यह यंत्र रावण को शक्ति प्रदान करता रहेगा, रावण पराजित नहीं होगा। उसके कारण को मैं प्रकट कर सकता हूं। इतना मैं त्याग कर सकता हूं। ऋषियों की सभा समाप्त हुई। रावण को सभा का पता चला, वह शिव से जानकारी लेने गया, शिव ने कहा कि आततायी का नाश होना चाहिए, कहकर मौन धारण कर लिया। रावण ने विचारा कि धनुर्याग को समाप्त करना चाहिए।

धनुर्याग हेतु विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण को मांगना-

महर्षि विश्वामित्र तपस्वी थे। वह राष्ट्र के महापुरोहित थे। महाराजा दशरथ के द्वार अयोध्या पहुंचे, और कहा कि मैं लक्ष्मण को लेने आया हूं। राष्ट्र में भ्रमण करने एवं दैत्य-प्रवृत्ति समाप्त करने के लिए मैं पुनः धनुर्याग कर रहा हूं। एक धनुर्याग तो मैंने इनके बाल्यकाल में महर्षि वशिष्ठ आदि ऋषि-मुनियों की आज्ञा से किया था, अब मैं राष्ट्र को सम्पन्न बनाने हेतु याग करना चाहता हूं। राजा दशरथ मोहवश झिझके, किंतु माता कौशल्या ने राष्ट्रहित में राजकुमारों का मोह त्याग कर दोनों को ऋषि को देने को कहा, जिससे दोनों इन्द्रियोंजय करके तपों में जीना सीखें। हे मानव तुम तपस्वी बनो, बिना तप के यह राष्ट्र, यह समाज, यह मानवता कदापि भी ऊंचा नहीं बना करती। लंगोटीधारी ब्रह्मचारी राष्ट्र को ऊंचा बना सकता है। महर्षि विश्वामित्र लंगोटीधारी थे। माता कौशल्या ने राम, और लक्ष्मण को ऋषि की सेवा में, ब्रह्मचर्य पालन की आज्ञा दी।

दण्डक वन में धनुर्याग-

महर्षि विश्वामित्र पुनः दण्डक वन में उन्हें उसी आश्रम में ले गये, जहां उन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों का अध्ययन किया था। रावण ने भी यह विचारा कि धनुर्याग को समाप्त करना चाहिए। राम लक्ष्मण को विश्वामित्र

धनुर्याग की यज्ञशाला में ले गये तथा उन्हें धनुर्याग की रक्षा का कार्य दिया, वह रक्षा करते रहे। धनुर्याग चलता रहा। छः माह तक याग चला।

महर्षि भारद्वाज आश्रम में धनुर्याग-

छः मास तक उस याग को पूर्ण कर महर्षि विश्वामित्र महर्षि भारद्वाज के आश्रम में गये। वहां उनका स्वागत हुआ। राम और लक्ष्मण महर्षि भारद्वाज सुकेता और कबन्धी तीनों से मिले और वेद की आंख्यिकाएं प्रकट कीं। भारद्वाज ने कहा कि हे राम लक्ष्मण तुम धनुर्वेद में परायण होकर रूढ़िवाद को समाप्त कर, एकोकीवाद का प्रसार करो। भारद्वाज आश्रम में वह छः माह तक रहे। उन्होंने वरुणास्त्र का निर्माण किया। एक ऐसे यंत्र का निर्माण कराया, जिससे पृथ्वी के गर्भ में कितनी दूरी पर कौन सा खनिज, जाना जाता था। एक अन्य यंत्र, जिसमें बैठकर लोक-लोकान्तरों की यात्रा करते। यह यान पृथ्वी से उड़ान उड़कर चन्द्रमा में, चन्द्रमा से उड़कर बुध में, बुध से उड़कर शुक्र में, शुक्र से उड़कर मंगल में, मंगल से उड़कर रोहिणी मण्डल में प्रवेश कर जाता है। रोहिणी मण्डल से उड़कर मृचिका मण्डल में, मृचिका से उड़कर वशिष्ठ मण्डल में, वशिष्ठ मण्डल से उड़कर अरुन्धती मण्डल में चला जाता। अरुन्धती मण्डल से उड़कर कृतिका मण्डल में, कृतिक मण्डल से उड़कर पुष्य नक्षत्र में चला जाता। पुष्य नक्षत्र से उड़ान कर स्वाति- वाचकेतु मण्डल में, वाचकेतु मण्डल से उड़कर सौर मण्डल में प्रवेश कर जाता है। सौर मण्डल से उड़कर यह मूल की आभा में प्रवेश कर जाता है। जब मूल कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ता है, तो यह रोहिणी में प्रवेश होकर भूलोक भ्रमण करके यान पुनः जहां से उड़ान उड़ता, वहीं स्थिर हो जाता था। एक यंत्र हमारे यहां इन्द्रेश्वर यंत्र कहलाता है, जिसमें विद्यमान होकर संग्राम करते रहते हैं। वह अन्तरिक्ष में भी उड़ान उड़ता रहता है। भारद्वाज से यह वर्णन सुन राम-लक्ष्मण बड़े प्रसन्न हुए और अपने में ज्ञान का विज्ञान का अध्ययन करने लगे। योगिकवाद का अध्ययन उन्होंने बाल्यकाल से ही किया था।

भारद्वाज आश्रम में रावण-आगमन-

महर्षि विश्वामित्र जब भारद्वाज आश्रम में पहुंचे, तो वहां राजा रावण भी आ पहुंचे। उन्होंने पूछा कि प्रभु यहां क्या रचना रची जा रही है। भारद्वाज मुनि ने कहा- यहां कोई रचना नहीं है, यहां तो विज्ञान की उड़ान है, कोई भी विज्ञान की उड़ान उड़ सकता है। धनुर्याग भी विज्ञान की उड़ान है। तुम्हारे यहां लंका में भी विज्ञान की विशाल उड़ान उड़ी जा रही है। विज्ञान किसी की सम्पदा नहीं है। वैज्ञानिक किसी राष्ट्र की सम्पदा नहीं। वह निष्पक्ष होकर किसी वस्तु पर चिन्तन-मनन कर, उसको साकार रूप देता रहता है। इसीलिए राम और लक्ष्मण, दोनों यहां विश्वामित्र को साथ लाए हैं, वे धनुर्याग के बारे में कुछ प्रश्न करना चाहते हैं। उन्होंने विचार-विनिमय किया। भगवान राम ने ब्रह्मचारी सुकेता ने, ब्रह्मचारिणी शबरी ने गागे पथ्य ने एक अहिल्या कृतिमा स्वायतन यंत्र का निर्माण किया, जिससे पृथ्वी के दस दस योजन नीचे कौन खनिज है, वह दृष्टिपात करता रहता है। भगवान राम ने उस यंत्र को जाना, जानने के पश्चात् वह अहिल्या पृथ्वी का उद्धार करने वाले बने। चन्द्रमा का गौतम और अहिल्या नाम रात्रि का है।

महर्षि भारद्वाज जैसा वैज्ञानिक उस काल में दूसरा नहीं था। वह केवल अनुसंधान ही करते रहते। वह नित्य योगाभ्यास करते। प्रातःकाल जागकर गायत्री छंदों का पठन-पाठन चिन्तन करते। नित्य कर्म से निवृत होकर ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ करते। उनकी यज्ञशाला में यंत्रों का निर्माण चलता रहता था।

अपने सब यंत्र भगवान राम को, रावण से संग्राम करते समय भारद्वाज ऋषि ने प्रदान कर दिये। उनका यहां नाना प्रकार के कोणों वाली यज्ञशालाएं थीं। उनमें से सत्पजिव्हा वाली अग्नि की तरंगों में जो परमाणु होते, तरंगें होतीं, उन्हें ऋषि एकत्रित करते रहते थे। महर्षि भारद्वाज आश्रम में पांच प्रकार की यज्ञशालाएं थीं। उनके यहां देवयज्ञ को विष्णुयज्ञ कहते थे। विष्णु नाम सूर्य का है। गौमेध, यज्ञ अश्वमेधयज्ञ की यज्ञशालाएं

भी थीं। महर्षि भारद्वाज के यहां जो पन्द्रह कोण की यज्ञशाला थी, उसमें वे आहुति देते थे। उससे जो तरंगें उत्पन्न होती थीं, उसके साथ वैज्ञानिक अपनी उड़ान शुरु कर देते थे। जैसे योगी सूर्यकिरण के आश्रित हो जाता है, किरणों को ही लेकर वह अन्तरिक्ष की उड़ान उड़ने लगता है। भारद्वाज के यज्ञशाला में राम, लक्ष्मण, सुकेता, देवर्षि नारद, चारों ने विचारा कि क्या अंतरिक्ष में उर्ध्व गति वाले यान का निर्माण कर सकते हैं? तो ब्रह्मचारी सुकेता, कजली वेश और रोहिणी केतु तीनों ने यान में विद्यमान हो करके पृथ्वी से उड़ान उड़ी, और लगभग ढाई घड़ी में चन्द्रमा में चले गये और वही यान ढाई घड़ी में मंगल में चला गया। परिणाम यह कि वही यान बहत्तर लोकों का भ्रमण कर, भारद्वाज की यज्ञशाला में पुनः आ गया। वह विज्ञान हमारे ऋषि-मुनियों के मस्तिष्क और क्रिया दोनों में रहता था। विज्ञान राष्ट्र की सम्पदा है। राष्ट्र विज्ञान पर स्थिर महर्षि भारद्वाज भौतिक विज्ञान में इतने प्रकांड थे कि नाना परमाणुओं का मिलान करना जानते थे। वे कभी चन्द्रमण्डल में, कभी मंगल में, कभी शुक्र में नाना लोक-लोकान्तरों में जाकर उनके भौतिक परमाणुओं को जानते थे। वही आत्मा की विवेचना आत्मा का दर्शन भी उनके यहां एक विशालता को प्राप्त होता रहता था। ब्रह्मचारी सुकेता ने भगवान राम से कहा कि हमारी विज्ञानशाला में ऐस-ऐसे यंत्र हैं कि यदि एक सहस्र वर्ष पूर्व भी किसी मानव का निधन हो चुका है, परन्तु यदि उस मानव का एक रक्त का बिन्दु आ जाए, तो यंत्र में उस रक्त के बिन्दु से मानव का चित्र भी साक्षात्कार हो जाता है। महर्षि भारद्वाज ने यह निर्णय कराया, और कहा कि एक रक्त के बिन्दु में इतने परमाणु होते हैं कि उनसे माता के गर्भ में एक बालक का निर्माण हो जाता है। वेद का आचार्य कहता है कि नाना चित्र अंतरिक्ष में रमण कर रहे हैं। ऋषि-मुनियों की जो उड़ान है, वह विज्ञान की बहुत बड़ी परमाणुवाद की उड़ान है। एक-एक शब्द को चित्र में लाया जाता है, उन शब्दों के साथ में जब चित्रावलियों में चित्र दृष्टिपात होने लगते हैं, तो मानव का जीवन सतोगुणी होता चला जाता है,

और मानव का राष्ट्र पुष्ट हो जाता है। यदि उसी विज्ञान में इन चित्रावलियों में अश्लीलता आ जाए, तो राजा का राष्ट्र नारकिक बन जाता है। भारद्वाज ने भगवान राम को यज्ञशाला का सर्वस्व रूप दृष्टिपात कराया। यह यज्ञ छः माह तक चला, तब उसकी पूर्णाहुति हुई। यह राष्ट्रीय यज्ञ था, जो भगवान राम ने संसार को विजय करने के लिए किया था। ऋषि-मुनियों ने विचार-विनिमय किया कि राष्ट्र को सुगन्धित बनाना है, देवपूजा, यज्ञों साकल्य द्वारा अपने कर्तव्य का पालन करना है। भारद्वाज आश्रम में शब्दावली केतु भूमक यंत्र द्वारा मानव लाखों वर्षों पूर्व के शब्द, जो द्यौलोक में रमण करते हैं, उन शब्दों को ग्रहण, तथा उन शब्दों को आकर्षित करता है, क्योंकि वह शब्द द्यौलोक में रमण करता रहता है। त्रेताकाल में भारद्वाज आश्रम में ब्रह्मचारी सुकेता रोहिणीकेतु और कबन्धी विज्ञानशाला में विद्यमान होते थे। रावण के वंशज कुम्भकरण, रावण, मेघनाद आदि सभी भारद्वाज आश्रम में विज्ञान सीखते थे।

राम कैसा विचित्र महापुरुष था, जिसके द्वारा एक महान क्रान्ति उनके मस्तिष्क में आती रहती थी, उन्होंने विष्णु बनने की सलाह दी। भगवान राम को आततायी रावण के राष्ट्र को नष्ट करने हेतु अपने अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। भारद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ ब्रह्मवेत्ता थे। विज्ञान द्वारा राष्ट्रों का उत्थान करते रहते थे। यज्ञ के रक्षक राम-लक्ष्मण बने, क्योंकि रक्षा वही कर सकता है, जो निष्पक्ष और श्रद्धामय बनकर समाज को उन्नत बनाने हेतु जीवन की आहुति दे देता है। रावण के राष्ट्र में रूढ़िवाद आ गया था, रावण के पुत्र मेघनाथ त्रिपुरी के राजा थे, उन्होंने इन्द्र के राज्य को नष्ट किया था। सर्वत्र उन्हीं का साम्राज्य था। राम जैसे त्यागी महापुरुष ने उनके साम्राज्य को आंकुचित कर दिया और अपनी संस्कृति का प्रसार किया।

११. जनक पुत्री सीता

जनक का वृष्टि यज्ञ-

जब राजा जनक के राज्य में वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ गया, राजा ने ऋषि-मुनियों की सभा की, जिसमें सोमपान ऋषि, शांडिल्य जी, मुदगल ऋषि, शौनक जी, आमान्तरि ऋषि आये थे। महर्षि वशिष्ठ मुनि भी उस समाज में आ पहुंचे थे। विचार विनिमय करते हुए राजा जनक ने अपने राष्ट्र में वर्षा न होने का कारण पूछा। उन्होंने कहा कि तुम्हारे विचारों में अशुद्धवाद, घृणावाद, प्रजा के प्रति स्वार्थवाद आ गया है, जिससे अनावृष्टि या अतिवृष्टि हो रही है। उन्होंने राजा जनक को वृष्टियज्ञ करने और स्वर्ण का हल बनाकर गौ के बछड़े को लेकर भूमि पर हल चलाने को कहा।

सीता का जन्म-

राजा जनक ने सबसे पहले वृष्टि यज्ञ किया। राजा ने संकल्प सहित आहुति दी। उनकी पत्नी गर्भवती थी। वह भी संकल्प सहित आहुति देती थी। उस संकल्प का परिणाम हुआ कि राजा जनक स्वयं गौ बछड़ों को लेकर स्वर्ण का हल बनाकर हल चलाने लगे। उसी समय राष्ट्र गृह में कन्या का जन्म हुआ, और वृष्टि होने लगी। ऋषि प्रसन्न हुए और राजा का संकल्प पूरा हुआ। राजा के आग्रह पर ऋषि-मुनियों ने कन्या का नामकरण किया, इसका नाम सीता रखा, क्योंकि व्याकरण के अनुसार सी नाम हल की फली का और ता नाम वृष्टि का है।

शिक्षा-दीक्षा एवं विवाह-

जनक कन्या सीता राजपुरोहित स्वरति मुनि महाराज के द्वारा वेदों और धनुर्विद्या का अध्ययन करती थी। पैंतीस वर्ष की आयु में भगवान राम का राजा जनक के यहां सीता से संस्कार हुआ।

१२. वनवास

राज्याभिषेक की घोषणा-

एक समय राजा दशरथ ने महर्षि वशिष्ठ मुनि से, अपने वृद्ध होने के कारण ज्येष्ठ पुत्र को राष्ट्र अर्पित करने की इच्छा बतायी। इससे पूर्व

अयोध्या में एक सभा में ऋषि-मुनियों ने चिन्तन कर, आततायियों को नष्ट करने हेतु राम को वनों में भेजने का निर्णय ले चुके थे। वशिष्ठ मुनि ने अपने कुछ ब्रह्मचारियों और माता अरुन्धति से विचार विमर्श कर राज्य सभाओं और ब्रह्मसभा निर्णयों की समीक्षा कर ब्रह्मवेत्ताओं के निर्णय को ऊंचा मानकर राम के वन-गमन का विचार दिया।

कैकयी द्वारा राम को वनवास की कामना : ऋषियों की योजना-

वशिष्ठ ऋषि ने राम के राजतिलक की घोषणा की, तो नाना ऋषियों ने कुछ सभाए गुप्त रूप से कीं। सर्वत्र अयोध्या में गान, मंगलगान होने लगे। उसी रात्रि में अभ्रेतु ऋषि, जो वशिष्ठ मुनि के शिष्य थे, मन्थरा के द्वार पर पहुंचे तथा उन्हें पत्र दिया। मंथरा ने वही पत्रिका कैकई को दी। कैकई ने जब उस लेखनी को पठन किया, तो वह राम के राजतिलक का विरोध करने लगी। मध्यरात्रि का समय था, महर्षि वाल्मीकि का कथन है कि मध्य रात्रि के काल में रानी कैकई कोपभवन में जा पहुंची। राजा दशरथ मध्य रात्रि में ही कोप भवन पहुंचे और कैकई से उनकी इच्छा पूछी, तो रानी ने कहा कि राम को वन जाना चाहिए, और मेरे पुत्र भरत को व्रती होना चाहिए। राम के राजतिलक की जानकारी लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न किसी को नहीं थी। राजा दशरथ को विचलित देख रानी कैकई ने अपने दो वचन मांगकर कहा, जिस समय कृष्णादित राजा के यहां तुम्हारा संग्राम हुआ, और कुबेर के यहां भी तुमने संग्राम के लिए अपनी घोषणा की थी, उस समय हमारे रथ की धुरी ध्वस्त हो गयी थी। उसके दो भाग हो गये थे, तो मैंने अपनी भुजाओं की अनामिका धुरी में परणित कर दी थी। क्योंकि मेरा रक्त क्षत्रिय था। उस समय आपने दो वचन देने को कहा था, उन्हें प्रदान कीजिए। राजा रावण ने घ्राती में (नाक के नीचे) समुद्र के मध्य में पृथ्वी का एक भाग ओतप्रोत करा दिया था। मैं और आप दोनों वाहन को लेकर उस कृतिमा में पहुंचे और वहां से उस यंत्र को लाये, जिसमें राजा कौशल की कन्या कौशल्या ओतप्रोत कर दी थी। उस समय तुम्हारा संस्कार कौशल्या से हुआ। वह तुम्हें प्रतीत

है। आज मेरे दो वचन हैं, जो मुझे, आपको देने हैं। आज मुझे राम को वन देना है, राम को ऐश्वर्य नहीं देना है। राजा मौन होकर एकान्त में चले गये। यह बात राम को प्रतीत हुई कि माता कैकई की इच्छानुसार मुझे वन जाना है, तो वह मध्य रात्रि में ही रानी कैकई के कोप भवन में पहुंचे। राम ने कैकई के चरणों को स्पर्श किया और वन-गमन की इच्छा व्यक्त की और राजसी वस्त्रों को अपने से दूर कर दिया।

माता कैकई के पास भारद्वाज का पत्र था, जिसमें उन्होंने कहा था कि राष्ट्र में चरित्र, विज्ञान, वेदों की रक्षा करनी है, समाज को पवित्रता में लाना है, तो राम की राष्ट्रीय परम्परा में स्थापना राजा के रूप मे नहीं होनी चाहिए। माता कैकई और कौशल्या दोनों ही चारों वेदों का अध्ययन करने वाली विदुषी थीं।

महर्षि वाल्मीकि ने अपनी लेखनीबद्ध करते हुए कहा कि भगवान राम को जब वन प्राप्त हुआ, तो इसमें कैकई माता का दोष नहीं था। यह दशरथ की आज्ञा नहीं थी, यह ऋषि-मुनियों की आज्ञा थी। बाल्यकाल में वशिष्ठ मुनि ने राम से रावण के आततायीपन अराजकता को समाप्त कर, अपनी संस्कृति का प्रसार करने को कहा था। भगवान राम ने वनवासी भील, द्रविद्र को अपनाया। राम के वनवास में माता कैकई का कोई दोष नहीं था। वशिष्ठ, विश्वामित्र, देवर्षि नारद, सोम और लोमश आदि ऋषियों ने ऐसा निर्णय कराया था। यह ऋषि-मुनियों की, ब्राह्मणों की विचारधारा थी।

वनवास से पूर्व माता-पिता की आज्ञा-

राम शोकाकुल राजा दशरथ के पास गये। दशरथ राम को हृदय से लगाकर बोले कि पुत्र मैं नहीं चाहता कि तुम वन जाओ। तुम राष्ट्र का पालन करो, राज को भोगो। राम ने कहा, जीवन का उपयोग महापुरुषों की आज्ञा पालन में ही है। सबसे प्रथम तो मेरे लिए माता ही महान हैं, उसके बाद आप और नाना ऋषि हैं।

राम एकरस रहने वाली महान आत्मा थी। मानव को तप में रहना

चाहिए। आपत्तिकाल में भी मग्नता होनी चाहिए। राम कैसे महान पुरुष कहलाये। वे सदा दैवी सम्पदा में विचरते रहते थे। कौशल्या जी को महर्षि वशिष्ठ कुछ कहकर अपने आश्रम में चले गये।

सूर्योदय के बाद कैकई आदि माताओं को प्रणाम कर राम, माता कौशल्या के द्वार पहुंचे। माता के चरणों को स्पर्श किया। माता कौशल्या अति हर्षित थीं। क्योंकि वह नहीं चाहती थीं कि मेरा राम राजसी विचारों में पनपता रहे। राजा दशरथ द्वारा स्वार्थवश तीन संस्कार क़राने को वेदविरुद्ध मानती थीं।

महर्षि शृंगी के अनुसार उन्होंने गर्भावस्था में राजसी अन्न ग्रहण नहीं किया, अन्न तपोमय होना चाहिए। आज का दिन मेरे लिए शोभनीय है। माता राम को आज्ञा देती है। कुछ ऋषि-मुनियों एवं आचार्यों के मना करने पर भी माता कौशल्या ने राम को वन गमन की आज्ञा दी।

सीता और लक्ष्मण की इच्छा, उर्मिला का संकल्प-

सीता को माता कौशल्या ने पति की सेवा हेतु निवेदन करने पर वन में साथ जाने की अनुमति दे दी। अब लक्ष्मण भी यही उच्चारण करने लगे। जब भगवान राम, लक्ष्मण और सीता वन जाने लगे, तो लक्ष्मण ने अपनी पत्नी उर्मिला से भी वन चलने को कहा कि मैं राम की सेवा करूंगा, तुम सीता की सेवा करना। तब उर्मिला ने लक्ष्मण के लौटकर आने तक निर्मल दूध की भांति संसार में रहने का वचन दिया। मेरे साथ होने से आपकी सेवा बाधित होगी। अतः आप जाइए और राम और सीता की सेवा करना।

राम लक्ष्मण सीता का वन गमन-

तीनों प्राणी राजसी वस्त्रों को त्याग कर भगवा वस्त्र धारण कर, अयोध्या को त्याग देते हैं। वन का अभिप्राय है जहां किसी प्रकार की सहायता प्राप्त न हो। जहां उनके जीवन का जो हृदय रूपी वन है, वह इतना विशाल बन जाए कि प्रत्येक प्राणी उनका मित्र बन जाए। नाना प्रकार की आपत्तियों का पान करते हुए भयंकर वनों में वह पर्वतों की

शैया बनाने वाले बने। माता की आज्ञा को पालन कर, मर्यादा पुरुषोत्तम राम बने।

निषाद को वन आने का कारण बताना-

एक समय जब राम लक्ष्मण के साथ विचर रहे थे, तब निषाद उनसे मिलने आये। निषाद ने राम से राजतिलक छोड़कर वन में जाने का कारण पूछा, तब राम ने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का धर्म बताया। धर्म में आस्था से ही मानव में ज्ञान, नम्रता आती है। मानवता के न होने पर जीवन अधूरा ही रहता है। वन भोगना ही हमारा कर्तव्य है। वन में रहेंगे, तो कुछ कर पाएंगे, और राष्ट्र में रहेंगे तो अपनी निजी संपत्ति भी खाएंगे। संसार में मानव दार्शनिक, आत्मिक, वेदपाठी, वन में रहने से बनता है।

राम का समाजवाद-

राम के जीवन की उदारता और मानवता से राष्ट्रवाद और समाजवाद याद आता है। पर्वतों में रहने वाले राजाओं को भगवान राम ने अपनाया। तुच्छ और दरिद्र को जब तक उदार राजा नहीं अपनाता, तब तक उसका कल्याण नहीं होता। राष्ट्र और समाज में महान संपदा नहीं आती। भगवान राम अयोध्या से कुछ नहीं लाए थे। इतने बड़े साम्राज्य से संग्राम किया। उन्होंने पर्वतों पर रहने वाले शूद्रों को अपनाया, निषाद को गले लगाया। शबरी जैसी शूद्र को अपनाया।

राम की गायत्री निष्ठा-

राम नित्यप्रति लगभग एक सहस्र गायत्री जाप का जाप करते थे। गायत्री जाप अभ्यास इतना उर्ध्व था कि वह मस्तिष्क स्थल में गायत्री को सहस्रों समय उसकी पुनरुक्ति करते, और पुनरुक्ति करते समय उनका मन गायत्री में रमण करता रहता। गायत्री हमारे यहां महापुरुषों का गुरुमंत्र कहलाता है। उनका जीवन ऋषि जीवन था ब्रह्मचर्य से संलग्न उनके जीवन में किसी प्रकार की त्रुटि न थी।

भरत का त्याग-

भरत के आने पर माता कैकई ने राजा बनने को कहा। भरत ने उसे अस्वीकार कर दिया तथा वन में जा, भगवान राम से उनकी चरणपादुका लाकर राज सिंहासन पर रख दीं। नियम बनाने वाले मंत्रीगण राष्ट्र के नायक बने हुए हैं। महर्षि सुषेण के पूछने पर भरत ने कहा, राम कन्दरा में रहते हैं, अतः मैं भगवान राम के आसन के निचले भाग में रहना चाहता हूं। मैं राम के समान आसन नहीं बनाना चाहता।

दण्डक वन में ऋषियों का सानिध्य-

भगवान राम जब दण्डक वन में सीताजी के साथ रह रहे थे, तब महर्षि लोमश, महर्षि अत्रि और माता अनुसूया उन्हें कर्तव्य की शिक्षा देते थे। अत्रि मुनि ने राम को एक यंत्र प्रदान किया, कहा कि यह यंत्र मैंने अपनी विज्ञानशाला में बनाया है। एक लाख बावन हजार भयंकर सेनाएं इस यंत्र से समाप्त हो जाएंगी। यंत्र को राम ने स्वीकार कर लिया। माता अनुसूया और महर्षि अत्रि दोनों साथ-साथ अनुसंधान करते, रात्रि और दिवस भर विचारों का यज्ञ आरम्भ रहता था। हमारे यहां 15 प्रकार के यज्ञ माने गये हैं। 84 प्रकार की यज्ञशालाएं होती थीं। उनमें लगभग 15 प्रकार की यज्ञशालाएं मुख्य हैं। चतुष्कोणीय यज्ञशाला, त्रिकोणी, पंचकोणी, सप्तकोणी यज्ञशाला होती हैं। देवी यज्ञ करने वाले सप्तकोणी यज्ञशाला बनाते हैं, क्योंकि अग्नि की सप्त जिह्वाएं हैं।

माता अनुसूया की सीता को शिक्षा-

वाणी से कोई वाक्य कदापि मिथ्या नहीं होना चाहिए, यही वाणी का तप है। एक समय मध्य रात्रि में अत्रि मुनि ने ऋग्वेद का गायन गाया, तो उस गायन से वृष्टि होने लगी। माता अनुसूया ने जो गान गाया तो दीपमालिका जागरूक हो गयी। यह वाणी का ही तप है।

त्रेता युग में माता अनुसूया और अत्रि मुनि परमाणु विद्या के विशेषज्ञ थे। दोनों अनुसंधान करते थे। माता अनुसूया ने सीता को कहा कि जब तक वन में रहना है, तब तक वनचरी रहना है, भोगचर में नहीं जाना है, गृहस्थ में नहीं जाना है। राम प्रस्थान करने लगे, तो तीनों को एक

पंक्ति में विद्यमान करके महर्षि अत्रि ने और माता अनुसूया ने उन्हें एक शस्त्र दिया, जिसके अंतरिक्ष में प्रहार से जलवृष्टि हो जाती थी। इस यंत्र को वरुणास्त्र कहते हैं। राम-रावण युद्ध में मेघनाद ने एक अस्त्र दागकर अग्निवर्षा की, जिससे राम की सेना, वानर सेना, समाप्त होने लगी, तब राम ने वरुणास्त्र का प्रयोग कर, अपनी सेना की रक्षा की थी।

भारद्वाज ऋषि की शिष्या वैज्ञानिक शबरी-

त्रेता युग में महर्षि कुरतुक महाराज की कन्या शबरी थी। वह शबरी भारद्वाज मुनि के यहां विज्ञान में परायण हुई। वह विज्ञानवेत्ता थी। उन्होंने भारद्वाज की विज्ञानशाला में उपकरणों और यंत्रों द्वारा यज्ञशाला में एक यंत्र का निर्माण किया। उस यंत्र में यह विशेषता थी कि एक रक्त का बिन्दु यंत्र में प्रवेश किया, और उस यंत्र में जिस मानव का रक्त का वह बिन्दु था, उस मानव का स्वरूप दृष्टिपात होने लगा। वह शबरी उपकरणों और यंत्रों के द्वारा विज्ञानवेत्ता बन गयी। यह वही शबरी थी, जिसके द्वारा राम को जब वह रावण को विजय करने चले तो भारद्वाज मुनि ने अपने सर्व यंत्रों को उन्हें प्रदान किया था, और यह कहा था कि तुम यह राम को प्रदान कर देना। वह यंत्रों को लेकर वहां पहुंच गयी।

गुप्तचर शबरी-

शबरी को भीलनी क्यों कहते हैं? क्योंकि वह भारद्वाज ऋषि के आश्रम से गमन कर, राम के राष्ट्र में प्रवेश करके शूद्र का कार्य करती थी, और प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि रखकर गुप्तचर का कार्य करके अपनी प्रतिभा और कार्यकुशलता का सूचक बनी हुई थी। यह राम की प्रिय भक्त थी। अपने स्पर्श किए फलों को राम को प्रदान करती थी, और राम श्रद्धा से ओतप्रोत होने के कारण उसे पान करते थे। वह विज्ञान में प्रवीण थी ओर भारद्वाज मुनि के आश्रम में शिक्षा अर्जित करती थी, इसीलिए शबरी को उन्होंने गुप्तचर विभाग में नियुक्त किया था। शबरी ने जितना भी उनके पास भारद्वाज मुनि का ज्ञान-विज्ञान का कोष और नाना यंत्र थे, सभी राम को प्रदान कर दिये थे और ऐसा ही स्वातिनाम का यंत्र सूर्य की किरणों

में, जो प्राणवर्धक तत्व होते थे, उनको अपने में स्थापित कर लेता था। अब यदि किसी राष्ट्र को भस्म करना है, तो अग्नि वाले परमाणु प्रदीप्त हो जाते थे, जिससे राष्ट्र भस्म हो जाता था। ऐसे अनेकों यंत्र शबरी ने राम को अर्पित किये थे। राम ने यंत्र लेकर अपने को धनी किया। शबरी महान दरिद्रता में रहती थी, परन्तु प्रभु का चिन्तन करती थी। राम की भक्त थी, राम उन्हें माता कहकर उनके चरणों को छुआ करते थे।

एक समय शबरी रामचन्द्र जी से वन में मिलने आयी और धर्म क्या पदार्थ है, प्रश्न किया। राम ने कहा कि हे देवी! हमारे अन्तःकरण में पवित्रता हो, और वाणी में नम्रता हो, यही धर्म की महत्ता है। अपने कर्तव्य का पालन ही धर्म है। नम्रता ही मानव को धार्मिक बनाने का सबसे बड़ा साधन है।

पंचवटी आश्रम में सुदर्शन ऋषि की राम से भेंट-

भगवान राम वनवास में पंचवटी पहुंचे, तब सुदर्शन ऋषि महाराज उनके पास पहुंचे। उन्होंने राम से आततायी रावण के आक्रमण से बचाव का साधन पूछा। राम ने अपने चरित्र और सत्यता से संग्राम करने को कहा। महर्षि भारद्वाज ने राम, लक्ष्मण को भयंकर जंगल में सुरक्षा हेतु यंत्र-तंत्र दिये थे। उन यंत्रों को राम ने पंचवटी पर युक्त कर लिया था। यह मानव की सधना की प्रतिभा होती है कि ऋषि-महर्षि भी उनके जीवनसाथी बन जाते हैं।

राजाओं से राष्ट्रवाद पर चर्चा-

पंचवटी आश्रम पर मगध राज्य के राजा सोम ब्रह्मा तथा कुछ अन्य राजा राम के दर्शनार्थ आये। आसन ग्रहण कर, उन्होंने राजा किसे कहते हैं? यह प्रश्न किया। राजा राम ने कहा कि राजा दो प्रकार का होता है। एक राजा का निर्वाचन प्रजा द्वारा होता है, दूसरा वंशानुगत होता है। राजा उसे कहते हैं, जो प्रातःकाल से ही अपने क्रियाकलापों में निहित हो, राष्ट्र में शुद्धिकरण लाता है। राजा के राष्ट्र में धर्म में एकाकीवाद और रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। राजा को प्राणायाम करने वाला होना चाहिए।

संसार में राजा को प्राण की भांति निस्वार्थ होकर रहना चाहिए। राष्ट्र और आश्रम को समानता और महानता का निर्णय देना चाहिए। राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणियों की रक्षा होनी चाहिए। राष्ट्र में विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए। इस प्रकार के राष्ट्र में कोई त्रुटि नहीं होती।

लोमश-काकभुशुण्ड से प्राण चर्चा-

प्राण किसे कहते हैं। प्राण तो संसार के प्रत्येक आंगन में क्रीड़ा कर रहा है। तुम्हारी वाणी में भी क्रीड़ा कर रहा है। भगवान राम ने और ऋषियों ने निर्णय लिया कि जो मानव प्राण को अपान में अपान को समान में, समान को व्यान में, व्यान को उदान में निहित करता रहता है। इन पांच का एक तारतम्य लग जाता है। ये अपने स्थान में परिवर्तनशील होते रहते हैं। भगवान राम प्रात: निवृत होकर प्राणायाम करते, नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित कर, यज्ञ करते थे। महर्षि लोमश मुनि जानते थे कि प्राण का कितना महत्व है। प्राण एक ऐसी विचित्र आभा में नियुक्त रहने वाला एक अनुपम सखा है, जिसको जानकर मानव अमरावती को प्राप्त हो जाता है। भगवान राम का जीवन सदा आज्ञाकारी रहा। वह रात्रि में प्रभु का चिन्तन करते रहते थे। भयंकर वनों में सिंहराज गरजते रहते थे। वह सिंह से भी खिलवाड़ करते थे, सर्पराज से भी खिलवाड़ होता रहता था, उनके लिए हिंसक भी अहिंसक बन गये थे। पंचवटी में नाना राजा और ऋषिजन उनके दर्शनार्थ आते रहते थे, और पशु-पक्षी भी क्रीड़ा करते रहते थे। वेदपाठ अध्ययन-अध्यापन का कार्य होता रहता था।

राजा सुबाहु की राम से भेंट-

एक समय सुबाहु राजा राम के दर्शनार्थ पंचवटी में आये। प्रजा में संग्रह की प्रवृत्ति का निराकरण तथा राष्ट्र को महान बनाने का उपाय पूछा। राम ने कहा कि तुम्हारे राष्ट्र में वैदिकता होनी चाहिए। इसके लिए राष्ट्र में, समाज में, प्रत्येक घर में पति-पत्नी ब्रह्म का चिन्तन करने वाले हों। उसके बाद देवपूजा से सुगन्धि, वेदध्वनि द्वारा यज्ञ होना चाहिए, तृतीय अतिथि सत्कार होना चाहिए, स्वाध्याय होना, ब्रह्मचर्य का पालन होना

चाहिए। प्रजा के संग्रह की प्रवृत्ति दूर करने को राजा को स्वयं संग्रह की प्रवृत्ति त्याग देनी चाहिए। पवित्र अन्न ग्रहण करना चाहिए। वितरण प्रणाली पवित्र होनी चाहिए। तो राजा के राष्ट्र में रक्तभरी क्रान्ति नहीं आएगी। राम ने कहा, जाओ सबसे पहले धर्म के नाम पर रूढ़िवाद समाप्त करो। राजा एकांकी धर्म वाला होना चाहिए। विद्यालयों में तपे हुए आचार्य होने चाहिए। राजा ने उनके चरणों का वन्दन कर वहां से गमन किया।

रावण की बहन की नाक कटने का रहस्य-

वनवास के अन्तिम वर्ष में रावण की बहन, जिसका नाम सोमतिति था, जो रावण की गुप्तचर विभाग की मुख्यिा थी, अति सुन्दर थी। पंचवटी में भ्रमण करने आयी। उसने चाहा कि मैं राम को अपना पति चुनूं। राम ने कहा कि मेरा संस्कार हो चुका है, तुम लक्ष्मण को अपना पति चुन सकती हो।

लक्ष्मण ने कहा तुम अपने माता, पिता, भाई से कहो कि तुम्हारा संस्कार कर दें। हम तो क्षत्रिय बालक हैं, हम तुम्हारा संस्कार नहीं कर पाएंगे। क्रोध में आकर लक्ष्मण ने कहा कि क्या तुम्हारे माता-पिता नष्ट हो गये। सोमतिति का अपमान हो गया। उसे अपने विधाता और राष्ट्र पर गर्व था। अपमान होने के कारण उसने अपनी नाक स्वयं काट ली। उसने ऐसा षड्यंत्र अपने परिवार को अपना अपमान जानने तथा दोनों (राम-लक्ष्मण) का नष्ट-भ्रष्ट करने हेतु किया। सोमतिति की नाक काटने का काम मामूली क्षत्रिय भी नहीं कर सकता। यह दोषारोपण मिथ्या है।

१३. सीता हरण - लक्ष्मण रेखा विज्ञान

पंचवटी में रावण पहुंचे। लक्ष्मण ने पंचवटी के अन्तर्गत एक रेखा का निर्माण किया और सीता से यह कहा कि हे मातेश्वरी इस रेखा से तुम बाहर नहीं जाना। कितना ऊंचा विज्ञान था, उस विज्ञान की हम कल्पना भी नहीं कर पाते। उस रेखा के जो आंगन में रहे, वह भस्म न होता हो, परन्तु बाहर से आने वाला प्राणी उस रेखा के अन्तर्गत आते ही भस्म हो

जाता था, उसमें इतनी विशालता थी। राजा रावण के यहां भी कितना विज्ञान था। चन्द्रयान थे, मंगलयान थे, शुक्रयान थे, परन्तु चरित्र नहीं था। राम, लक्ष्मण के द्वारा कितना चरित्र था, विज्ञान के साथ चरित्र बहुत था।

गृहत्याग के बाद राम ने संसार से मिलान की प्रक्रिया अपनायी। इसके बाद छः माह ऋषि भारद्वाज आश्रम में परिणित हुए। उन्हीं के आश्रम में लक्ष्मण ने उस रेखा को जाना, उस रेखा को सोमतिती रेखा कहते हैं। वह इस प्रकार की रेखा थी कि जिस रेखा में यह जो नाना प्रकार का परमाणुवाद है, इन परमाणुओं की उन अणुओं की धारा यंत्र से दूरी न जाए। वह यंत्र इनकी अग्नि को ऐसे निगल जाता था, जैसे वर्षाकाल में पृथ्वी जल को अपने में शोषण कर जाती है। इसी प्रकार वह जो भयंकर अग्नि यंत्रों से उगली जाती थी, ऐसे विशाल अग्नि को वह अपने में शोख लेता। उसको भगवान कृष्ण भी जानते थे, और लक्ष्मण भी जानते थे।

महर्षि भारद्वाज, महर्षि शाण्डिल्य, महर्षि दधिचि उस रेखा को जानते थे। वह रेखा में अग्नि के परमाणुओं को, और जल की धाराओं को भी निगल जाती थी। जैसे पृथ्वी, मंगल में पार्थिव तत्व प्रधान है, उसी तरह वृहस्पति मंडल में जल तत्व प्रधान है। सोमनाकृतिक नाम के यंत्र वायुमण्डल में जल के परमाणुओं को एकत्र करने की शक्ति होती है, और यंत्र के दूसरे भाग में अग्नि तत्व के परमाणुओं को धारण करने की शक्ति होती है। तृतीय भाग में वायु के परमाणुओं को धारण करने की शक्ति होती है। इसी प्रकार पांचों परमाणु जब यंत्रों द्वारा एकत्रित किये जाते हैं, तो विद्युत कृतियों द्वारा जिसमें वह रेखा इस प्रकार बनती है, उस रेखा में परमाणु युद्ध के समय तीक्ष्ण परमाणुओं को निगलने की शक्ति होती है। माता सीता ने अपने जीवन को पूर्ण तपस्या से व्यतीत किया, किंतु उनको लक्ष्मण को कहे एक हिंसा के शब्द ने रावण के कारागार में डाल दिया। हिंसा शब्द का प्रारम्भ मानव के हृदय से होता है, अतः मानव का हृदय और मनस्त्व दोनों महान चिन्तन वाले होने चाहिए।

सीता को ले जाते हुए रावण से गरुड़ का संग्राम-

आजकल सम्पाती को गिद्ध मानते हैं, जो गलत है। एक वैज्ञानिक राजा को, जो वायुमण्डल में सूर्य की किरणों के साथ गति करने वाला हो, गिद्ध नहीं हो सकता। महाराजा सम्पाती और गरुड़ दोनों विधाता अनुसंधान करते थे। समुद्र तट पर उनका सूक्ष्म-सा राज्य था। राजा रावण ने उनके राज्य को विजय कर लिया था। गरुड़ तो महर्षि लोमश मुनि के आश्रम में प्रवेश कर गये और सम्पाती समुद्र के तट पर सम्भुक ऋषि महाराज के आश्रम में चले गये थे, उनका राष्ट्र समाप्त हो गया था, परन्तु वे वैज्ञानिक थे। अपने में अनुसंधान करते रहते थे, विचार-विनिमय करते रहते थे। गरुड़ ने रावण से संग्राम किया था। सम्पाती तो समुद्र के किनारे संयत रहता था। उसके राष्ट्र को रावण ने विजय कर, सुरसा को उसके राष्ट्र की अधिराज बना दिया था।

१४. सीता की खोज

बाली वध और सुग्रीव को राज्य-

बाली ने अपनी संस्कृति और चरित्र को नष्ट कर लिया था तथा अपने लघु भ्राता सुग्रीव की पत्नी को अपनाया, इसलिए राम ने बाली का वध किया। बाली चारों वेदों का ज्ञाता था, परन्तु चरित्र नहीं था। बल का अभिमान था, अतः राम ने उसे मारकर सुग्रीव को राजा बनाकर अपनी संस्कृति का प्रसार किया।

१५. सूर्य वैज्ञानिक हनुमान

सीता खोज के लिए हनुमान को प्रेरणा-

हनुमान जब माता सीता की खोज के लिए लंका जाने लगे, तो भगवान राम से पूछा कि महाराज मैं कौन-सी शक्ति से जाऊं? उस समय राम ने कहा था कि तेरे में जो भय है और हृदय में संकोच है, उन सबको मेरे में अर्पण कर, और तू सीता की खोज कर। मैंने वह शक्ति पायी है कि मैं उन पर विजय प्राप्त कर लूंगा। आज उन्हीं विचारों से अपने जीवन

को ऊंचा बनाना है।

हनुमान का योगदान-

हनुमान पवनपुत्र कहलाते थे। वे अंजना के पुत्र थे। महाराजा महीवृत केतु की कन्या का नाम अंजना था। महाराजा महेन्द्र के राजकुमार पवन कहलाते थे। जब वह भयंकर वनों में रहते थे, तो माता अंजनी कहती थीं कि हे बालक सूर्य विद्या का ज्ञाता बन। जब महाराज हनुमान जी का नामकरण हुआ और वे आचार्य कुल में प्रविष्ट हुए। उनके राजपुरोहित सुरेश्वर ऋषि थे। सुरेश्वर महाराज उन्हें धनुर्विद्या तथा सूर्यविद्या प्रदान करते थे। बाल्यकाल में ही महाराज हनुमान जी ने काल ब्रीहि वृत्तेः सूर्य विद्या को अपने में निगल लिया। सूर्यलोक को नहीं निगला जाता है। सूर्य में जो विद्या है, सूर्य में जो प्रतिभा है, उस प्रतिभा को निगलने का नाम ही सूर्य को निगलना है। हनुमान जी का जन्म कदली वनों में हुआ, पर्वत की मालाओं में हुआ।

गुरुकुल में सूर्यविद्या की शिक्षा-

बटुक मुनि महाराज के आश्रम में स्वाति ब्रह्मचारी और हनुमान दोनों में सूर्य सिद्धांत सूर्य की किरणों के साथ गति बनाने पर विचार होता था। माता सीता की खोज के समय हनुमान जी का सम्पाती से समुद्र तट पर मिलन हुआ। सम्पाती के परामर्श से सूर्य की किरणों के आश्रित होकर विज्ञान की तरंगों से समुद्र को लांघ दिया। सूर्य की किरणों से विद्युत को जानने वाले वैज्ञानिक अपने को सूर्य मण्डल तक ले जाते थे। हनुमान अपने विद्यालय की विज्ञानशाला में एक-एक सूर्य की किरण को लेकर उसकी विद्युत को यंत्रों में प्रवेश कराकर उन यंत्रों को गति कराते थे। सूर्यकेतु नामक एक पोथी का निर्माण महाराजा हनुमान ने किया था, जिसमें सूर्यविद्या का विज्ञान था।

हनुमान और गणेश का अनुसंधान-

महाराजा हनुमान और गणेश जी दोनों साथ-साथ विज्ञान में रत रहते यंत्रों का निर्माण करते, उन यंत्रों में विद्यमान होकर अंतरिक्ष में पृथ्वी

की ओर चन्द्रमा की जहां आकर्षण सीमा मिल जाती है, वहां यंत्रों की यंत्रशाला बनाते, और वहीं एक निर्माणशाला में यंत्र को स्थिर कर देते थे। उनके ऐसे-ऐसे यंत्र थे कि उससे मानव समुद्र पर गति कर रहा है, परन्तु समुद्रों में प्रवेश नहीं हो रहे हैं। एक से बढ़कर एक यंत्र, जिसमें विद्यमान हो करके अग्नि प्रदीप्त करके यंत्र से रावण की लंका को विध्वंस कर सकते थे। वह सब यंत्र उनकी आभा में रहते थे। एक समय महाराज हनुमान और गणेश घूमते हुए श्वेतान ऋषि के द्वार पहुंचे और कहा कि हम सूर्य विज्ञान पर अपना अनुसंधान करना चाहते हैं। महाराज गणेश और हनुमान जी ने पादुका नामक यंत्र का निर्माण किया था। प्राणशक्ति का उनमें उन्होंने सृजन किया। पादुका पर विराजमान होकर इस पृथ्वी से उड़ान उड़ने लगे और पृथ्वी से उड़ते हुए वे मंगल में गये, तो मंगल के वैज्ञानिकों ने यंत्र को कटिबद्ध करना चाहा। उस समय मंगल में स्वेताम वृहीणिक नाम के एक वैज्ञानिक रहते थे। उन्होंने उस यंत्र को अपने राष्ट्रमण्डल में रखने के लिए प्रयत्न किया और अपने यंत्रों के एक रूपांतर द्वारा उसके ऊपर आक्रमण किया, तो हनुमान और गणेश जी दोनों उस यंत्र को लेकर अन्तर्ध्यान हो गये और यंत्र को ले करके वे पृथ्वी पर आ गये। हनुमान जी की मृत्यु नहीं हो सकती थी। हनुमान जी के शरीर की आभा इतनी विचित्र बनी रहती थी। महाराजा गणेश जी ने 'चुगेत' नाम के यंत्र का निर्माण किया था। उसमें वह विद्यमान होकर इस पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए सूर्य की किरणों के साथ सूर्य में प्रवेश कर जाते थे। गणपति (गण+प्राण) प्राणेश्वर है। गणपति के साथ लक्ष्मी व सरस्वती का वास है।

हनुमान जी की दिनचर्या-

हनुमान जी मध्य रात्रि के दूसरे पहर में अपने को जागरूक करते और अतिसूक्ष्म निद्रा में रहते। श्वान निद्रा में रहते अपनी प्रातःकालीन क्रियाओं से निवृत होकर प्रभु का चिन्तन और दर्शनों का अध्ययन करते हुए संसार के कार्यों में रत रहते। नाना प्रकार के यंत्रों को लाकर सूर्य की

किरणों से उनका मिलान करते थे। सूर्य की किरणों से विद्युत लेते। उसी विद्युत से उनके यंत्र गति करते थे। वर्तमान में ऐसे महापुरुषों को गम्भीर मुद्रा वाले हनुमान को वानर की संज्ञा देकर के उनके वास्तविक तथ्य को नष्ट किया जा रहा है।

सूर्य विज्ञान के ज्ञाता-

हनुमान जी सूर्य विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान थे। एक समय भगवान राम ने उनसे कहा- हे हनुमन्त प्रभे कृते ब्रह्मः तुम आज सूर्य विज्ञान की वार्ता प्रकट करो। संसार में सूर्य किरणों से रोगों का विनाश कैसे होता है। जैसे वायु पृथ्वी है। इस प्रकार की यह पंचमहाभौतिक है। इन्हीं के अनुरूप जैसा जिसका रंग होता है, उसी प्रकार की सूर्य में किरण होती है। मानव शरीर में पंच महाभूत जल, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, पृथ्वी कार्यरत है। मानव के द्वारा जब पृथ्वी का प्रवाह कम हो जाता है, वायु प्रवाह सूक्ष्म हो जाता है, तो जो तत्व शरीर में सूक्ष्म हो जाता है, उसी प्रकार की किरण को लाया जाता है। वही किरण मानव शरीर में प्रभावी हो जाती है, और मानव का रोग शांत हो जाता है। सूर्य वैज्ञानिक पुरुषों ने सूर्य अस्त्र नाम के यंत्रों का निर्माण किया है।

हनुमान जी और प्राण विद्या-

काक भुषुण्ड जी प्राण विद्या के ज्ञाता थे। हनुमान जी ने उनसे प्राण विद्या सीखने का निवेदन किया। काक भुषुण्ड जी अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ना जानते थे। पृथ्वी में, समुद्र के आंगन में भी अपनी गति को जानते थे। काकभुषुण्ड जी अन्तरिक्ष गति करते, उदान, प्राण और नाग प्राण दोनों का मिलान कर करते कृकल, देवदत्त और उदान को मिलान करके अपने शरीर को अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ते। हनुमान जी ने सुरसा के मुख में प्रवेश किया तथा बाहर भी निकल आये।

हनुमान द्वारा सूर्य को मुख में लेने का वास्तविक आशय-

हनुमान जी ने सूर्य विज्ञान को जाना। सूर्य विज्ञान उन्हें कण्ठस्थ था। उन्होंने सूर्य को नहीं, सूर्य के महान गुणों को सूर्यविद्या को निगल

लिया था। सूर्य निगला नहीं जाता है। अनुसंधान द्वारा हनुमान जी ने पादुका यंत्र का निर्माण किया था, जो सूर्य की किरणों के साथ सूर्य मण्डल की यात्रा करता था। हनुमान जी सूर्य विद्या के महापंडित थे। हनुमान जी गान विद्या से प्रकाश कर देते थे तथा वाणी से दीपक को प्रकाश कर देते थे, जिसे दीपमलिका कहते हैं।

हनुमान जी का विवाह-

जब ब्रह्मचारी हनुमान 48 वर्ष के हुए, तो महाराजा सुग्रीव की कन्या से उनका संस्कार हुआ। महाराजा सुग्रीव और बाली दोनों विधाता भ्राता थे। उस संस्कार के बाद एक पुत्र को जन्म देकर उस कन्या का निधन हो गया। उसे निधन के बाद उनकी माता अंजना ने पुनः कहा कि पुत्र तुम संस्कार कराओ। उन्होंने कहा, हे माता मैं परमात्मा के विज्ञान में जाना चाहता हूं। अब मैं इस प्रकृतिवाद को जानना चाहता हूं। मेरी संस्कार की इच्छा नहीं। मेरा पितर याग का उद्देश्य पूरा हो गया। मेरे पिता ने मुझे उत्पन्न किया, और मैंने एक पुत्र को जन्म दिया। उनके पुत्र पातालपुरी में रहते, जिसे वह रक्षित कर रहे थे। हनुमान द्वारा चौदह सौ अश्विनी के समुद्र को वाल्मीकि के अनुसार यौगिक क्रियाओं द्वारा समुद्र को पार किया तथा हनुमान अपने यान पादकेतु द्वारा सीता को खोजने लंका पहुंचे थे।

सुरसा वध-

श्वेताम नामक राजा की लड़की का नाम सुरसा था। उसका पूरा नाम सुरसा सोमकेतु था। वह विज्ञान द्वारा मुंह को बहुत उर्ध्वा में कर लेती वह अपने मुंह को बड़ा कर लेती तथा छोटा कर लेती थी। एक मुख मानित यंत्र था, जो उसने अपने मुख में, आस्वान किया था। जब हनुमान यंत्रों से समुद्र पार करने लगे, तो मार्ग में सुरसा ने हनुमान जी को मुख में परिणत कर लिया। हनुमान जी ने भी अपने शरीर को विशाल बनाया। उनके पास भी एक यंत्र था, जो उन्हें महाराज जामवंत की प्रेरणा से महाराजा सम्पती ने दिया था। यंत्र का नाम सगतक था। सुरसा के मुख के मुखमानित यंत्र को हनुमान जी ने इस सगतक यंत्र से प्रहार कर नष्ट

सुरसा का विनाश किया और हनुमान सुरसा के मुख से निकलकर लंका में घुस गये। महाराजा हनुमान अकुंचन शक्ति के अनुसार अपने शरीर को सूक्ष्म और विशाल बनाने को अनुसंधान करते थे। आकुंचन की यह गति योगाभ्यास से ही आती है। मानव के शरीर को स्थूल बनाना और सूक्ष्म बनाना, यह कूर्म और कृकल दोनों प्राणों का कार्य है। यदि हम उदान प्राण से कूर्म और कृकल प्राणों का मिलान करना जानते हैं, तो अपने शरीर को सूक्ष्म बना सकते हैं, और शरीर को इच्छानुसार संकुचित कर सकते हैं। हनुमान इस क्रिया को जानते थे।

प्रकृति की पांच प्रकार की गतियां मानी जाती है। अकुंचन, प्रसारण, उर्ध्वा, ध्रुवा और गमन। इन पांचों प्रकार की गति को जानने वाला योगेश्वर अपने को स्थूल रूपों में ला सकता है, और सूक्ष्म में आकुंचन के द्वारा बना सकता है। योगीजन इस विज्ञान को प्राण की क्रिया से जानते हैं। हनुमान जी लघुता कृतिका दोनों प्रतिक्रियाओं को जानते थे। वे प्राणायाम द्वारा वायु में गमन करते थे। प्राणायाम द्वारा वे जल के समुद्र के रसातल में भी गमन करते रहते थे।

अशोक वाटिका में सीता-

माता सीता में महान चरित्र की आभा थी। माता सीता का हृदय वैदिक गुणों से गुंथा था। रावण उसको छू भी नहीं सकता था। माता सीता ने कहा था कि हे रावण मैं सती हूं। आज यदि तूने मेरे शरीर को छू भी लिया, तो तेरा अनिष्ट होता चला जाएगा। रावण उन्हें छू भी नहीं सका। माता सीता को कलंकित नहीं बना सका, क्योंकि उनका तप था, उनकी मानवता थी, उनका सतीत्व था, जो माता का वास्तविक आभूषण होता है।

यज्ञोपवीत के रक्षक हनुमान-

जब महाराजा हनुमान लंका में पहुंचकर वाटिका को नष्ट कर रहे थे, तब रावण पुत्र मेघनाथ ने उन्हें ब्रह्मपाश में फांस लिया। ब्रह्मपाश यंत्र भी होता है। परन्तु जिस ब्रह्मपाश में हनुमान को फांस लिया था, वह

केवल यज्ञोपवीत था। यज्ञोपवीत को ही ब्रह्मपाश कहते हैं, क्योंकि वह केवल त्रिविधा को प्रदान कराता है। जो यज्ञ के कवच को धारण कर लेता है, उसे कोई मृत्यु को प्राप्त नहीं करा सकता। यज्ञोपवीत एक कवच कहलाता है। जैसे देवी का पूजन करने वाला देवी के कवच को धारण कर लेता है और संध्या करने वाला संध्या के कवच को धारण कर लेता है, जो कवचों को धारण करता है। दूषितता उसके पास नहीं आती।

१६. राम की रणनीति

शिव का सहयोग-

जग भगवान राम समुद्र तट पर पहुंचे, तो उन्होंने महर्षियों की सभा की। वहां उन्होंने महाराजा शिव को आमंत्रित किया, और उन्हें निमंत्रण दिया। कैलाश से जब शिव आये, तो राम ने नतमस्तक होकर निवेदन किया कि मैं यहां रावण से संग्राम करने आया हूं। अब भगवान मुझे क्या करना है? आप क्या आज्ञा देंगे? तो महाराजा शिव ने उन्हें 'शिवास्त्र' प्रदान किया। भगवान राम ने शिव पूजा कर, प्रार्थना की कि आप इनकी (रावण की) रक्षा करते रहते हैं। इनको नष्ट कर, रूढ़ियों को नष्ट करना चाहता हूं। महाराजा शिव ने भगवान राम को दो यंत्र दिये। एक यंत्र ऐसा है, जिससे रावण की सारी सेना अग्नि के मुख में चली जाएगी, परन्तु दूसरा यंत्र ऐसा, जिससे वृष्टि प्रारम्भ हो जाएगी और सेना की सुरक्षा होगी और सचेत किया कि मैंने पूर्व में रावण पुत्र मेघनाद को भी यह शक्ति प्रदान की है। राम रावण संग्राम में मेघनाद द्वारा की अग्नि वृष्टि को राम ने उस यंत्र से वर्षा कर अपनी सेना की रक्षा की।

वैज्ञानिक राजा जामवन्त का सहयोग-

जामवंत रीछ नहीं, महान वैज्ञानिक थे। समुद्र के तटों पर वह विज्ञान के मचान बनाते थे, तथा उन मचानों से विज्ञान के ऐसे यंत्रों को निर्धारित करते, जिनसे समुद्र के पदार्थों का ज्ञान हो जाता था। उस यंत्र उर्जा में आते थे। उन्होंने और भी यंत्रों का निर्माण किया था। वह राजा

थे। रावण ने इन सबके राज्यों को अपना लिया था। जामवन्त ने युद्ध में राम की सहायता की। उन्होंने राम को ऐसा यंत्र दिया, जो विषैले परमाणुओं को निगल जाता था।

नल-नील का सहयोग-

नल व नील दो वैज्ञानिक इसी भूमि के (प्रवचन स्थली, हैदराबाद) के निवासी थे, जो लंका को विजय करने के लिए भगवान राम की सहायता को पहुंचे थे। महर्षि वाल्मीकि ने नल-नील की प्रशंसा की है। नल नील बड़े वैज्ञानिक तथा शिल्प विद्या में निपुण थे। उन्होंने सेतु बांधा, उसी से आवागमन होने लगा। उस समय लंका द्वीप भारत के बहुत ही निकट था। साढ़े आठ लाख साल में समुद्र में अनेक परिवर्तन हुए हैं।

रावण को राम की तैयारी की जानकारी तथा
रावण की विभीषण से मंत्रणा-

रावण को राम के संग्राम तैयारी की सूचना थी। उसके विधाता विभीषण प्रभुभक्त थे। वह रावण के दुराचार से दूखी थे। रावण के विभीषण से वार्ता का कोई परिणाम नहीं निकला। विभीषण के सीता को वापस देने और राम के चरणों की वन्दना की सलाह रावण को रास नहीं आयी। अतः रावण ने विभीषण को पदों की ठोकर से ठुकराया तथा विभीषण को वहीं राम की शरण जाने को कहा। तब विभीषण समुद्र तट पर राम के समक्ष पहुंचे। राम ने विभीषण का दुख सुनकर उसे अपनी शरण प्रदान कर दी। वह वहां आनन्दपूर्वक रहने लगे। राम ने विभीषण से रावण को हराने के विषय पर चर्चा की। विभीषण ने राम को बताया कि रावण के पुत्र बड़े बलवान हैं, तथा रावण स्वयं भी बड़ा ज्ञानी, बलवान और वैज्ञानिक है। रावण का पुत्र नारायन्तक बड़ा वैज्ञानिक है। वह आपका नाश कर देगा। रावण के गुरु महाराज शिव हैं, जिनकी प्रजा बहुत ऊंची और वैज्ञानिक है। ऐसे राजा रावण को, जिसके सहायक कैलाशपति शिव हैं, आप नहीं जीत पाओगे।

राम का अजयमेघ यज्ञ-

विभीषण के परामर्श से राम ने विजय हेतु अजयमेघ यज्ञ का पूरा विधान किया। रावण को निर्मंत्रित किया। यज्ञ का ब्रह्मा रावण बनाया गया। राम रावण को निर्मंत्रित करने गये। रावण ने यज्ञ कराना स्वीकार किया। राम-लक्ष्मण ने सुन्दर यज्ञशाला बनायी। तीसरे पहर रावण वहां पहुंचे। दोनों भाइयों ने रावण का स्वागत किया और राम ने उन्हें यज्ञ का ब्रह्मा नियुक्त किया तथा यज्ञोपवीत धारण करने पर राम-लक्ष्मण का परिचय जानकर रावण विस्मित हुए, लेकिन ब्रह्मा चुने जाने के कारण विधि -विधान से यज्ञ कराया, तथा सीता जी को अपने पुष्पक विमान द्वारा अशोक वाटिका से लाकर सीता जी को राम के दक्षिण भाग में बैठाया तथा यज्ञ को पूर्ण कराया। यज्ञ पूर्ण होने पर सीताजी ने रावण को दक्षिणा हेतु कुछ न होने पर कौड़ी जूड़ा दिया। रावण ने कहा यह मुझे स्वीकार है, परन्तु मैं किसी का श्रृंगार भ्रष्ट नहीं करना चाहता। यज्ञ पूर्ण होने पर रावण ने राम को कहा था कि मुझे आभास हो रहा है कि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। आशीर्वाद देकर सीता से कहा, हे सीते यदि तुम चाहो तो अपने पति की सेवा करो, नहीं तो मेरी लंका चलो। सीता ने कहा कि आज से तुम मेरे पिता बह्मा होने से बन गये हो। मुझे तो यहां भी और वहां भी ऐसा। मैं आपके साथ चलूंगी। इसका नाम धर्म है। राम ने भी यह नहीं कहा कि सीता तुम कहां जा रही हो। तब सीता रावण के साथ पुष्पक विमान में बैठ गयी। रावण ने सीता से कहा था कि अब मेरे विनाश का समय आ गया है। मेरी महान प्रजा समाप्त होने वाली है। जिसने शत्रु को अपना लिया है और अपना ब्रह्मा बनाकर उसकी आत्मिक ज्योति को खींच लिया है, उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी। मुझे यज्ञ पूर्ण नहीं करना था। मेरी लंका में एक भी मानव नहीं रहेगा। यह कहते हुए रावण शोकयुक्त हो गया।

अंगद का सहयोग-

त्रेता युग में महाराजा बालि के पुत्र अंगद हुए। उनकी इच्छा योगी बनकर प्राण विद्या जानने की थी। अंगद ऋ...ो ऋषि के द्वार पर पहुंचे।

योगी बनने की इच्छा प्रकट की। ऋषि ने शान्तना में परिणित होकर ब्रह्मकृतं वायु सम्भवं ब्रह्मा ऋषि प्राण को एकत्रित करने को तत्पर हो गये। उन्होंने एक संकल्पमयी प्राणायाम उस प्राणुर्भाव की रचना का वर्णन किया। अंगद बारह वर्षों तक प्राण विद्या का अध्ययन करते रहे। उनका नाम अंगद और मेघनाद दोनों कहलाता था। सदैव प्रारोद्य से उदगीत गाते थे। उच्चारण करते रहते थे। उनको माता मेघनाद कहती। पिता अंगद कहते थे। राम भी उन्हें अंगद कहते थे।

राम के राजदूत अंगद-

भगवान राम ने जब रावण से संग्राम करने के लिए समुद्र तट पर अपनी सेना नियुक्त की, तो उन्होंने बालीपुत्र अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजा कि उसका विचार परिवर्तन हो जाए, तो अच्छा है। उसके राष्ट्र और प्राणियों की रक्षा हो जाएगी। अंगद ने जाते समय भगवान राम से पूछा कि भगवन मैं समन्वय कैसे कराऊं, कैसे कर सकता हूं? मुझे कोई आज्ञा तो दीजिए। उन्होंने कहा कि समन्वय यही है कि वह सीता को मुझे प्रदान कर दे, और अपनी लंका का राज्य सुचारू रूप से करे और कोई किसी प्रकार का वाद का विषय नहीं होना चाहिए। अंगद ने यह बात स्वीकार कर लिया। अंगद भ्रमण करते हुए लंका में पहुंचे। राजा रावण अपने न्यायालय में विराजमान थे। एक आसन पर मेघनाद और एक आसन पर कुम्भकरण जी विद्यमान हैं। द्वारपाल द्वारा राजा रावण से मिले। रावण से कहा मैं आज आपके यहां राजदूत बनकर आया हूं। मेरी इच्छा है कि आप राम से विलय कर, अपने में समन्वय कर लें, तो प्रियता बढ़ेगी। रावण ने विलय करने में समय नष्ट न करने को कहा। अंगद ने रावण की सभा में पद स्थापन कर कहा, रावण यदि तुम बलवान हो, तो मेरे इस पग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कर दो, तो मैं माता सीता को त्याग कर राम को लेकर अयोध्या चला जाऊंगा। मेघनाद आदि बलवान अंगद का पग नहीं हटा सके। रावण के द्वारा पग हटाने आने पर अंगद ने कहा कि आप इस योग्य क्यों बनते हो कि आप मेरे पगों का

स्पर्श करो। तुम राम के पगों को स्पर्श करो, जिससे तुम्हारा उद्धार हो जाए, और तुम्हारी लंका सुरक्षित रहे।

१७. रावण के पुत्र - उनकी शिक्षा

राजा रावण के चार राजकुमार हुए। सबसे ज्येष्ठ पुत्र अहिरात केतु था। उसे बाद में अहिरावण कहा गया। द्वितीय पुत्र का नाम मेघकेतु था, जिसे बाद में मेघनाद कहा गया। नारायन्तक और अक्षय कुमार। ये चार पुत्र थे। विभीषण के भी दो पुत्र थे, जिनका नाम श्वामिकेतु और त्रेतकेतु था। एक पुत्र कुम्भकरण का था, जो सुमेतुकेतु कहलाता था। ये सातों राजकुमार लंका के विद्यालयों में अध्ययन करते थे। लंका में ऐसे-ऐसे ऊंचे विश्वविद्यालय थे, जहां विज्ञान की उड़ान उड़ने वाला ऊंचे से ऊंचा वैज्ञानिक था।

अहिरावण-

रावण के ज्येष्ठ पुत्र अहिरावण का शिक्षालय में यह विषय रहा कि मैं जिस प्राणी को तरंगवाद से मुर्छित करके जहां भी ले जाना चाहूं, वहां ले जा सकूं। मोहिनी राग उनका विषय था। यह विद्या उन्होंने गाडीवान रेवक मुनि से प्राप्त की थी। अहिरावण पातालपुरी अमेरिका के राजा थे। पातालपुरी में ज्ञान भी था, विज्ञान भी था और दुग्धधारी पशु बहुतायत में थे। उसकी पूजा होती थी। राष्ट्र की प्रतिभा राजा पर निर्भर होती है। राजा जैसा आहार-व्यवहार क्रियाकलाप करता है, उसी के आधार पर समाज का निर्माण होता है।

इन्द्रजीत मेघनाद-

स्वाति ऋषि के यहां अंगद और मेघनाद दोनों प्राण विद्या का अध्ययन करते थे। मेघनाद बड़े वैज्ञानिक थे। इन्द्र के यहां जाकर उन्होंने शिक्षा का प्रदर्शन किया था। मंगल मण्डल में यंत्रों के द्वारा जा करके उन्होंने विद्या का अध्ययन किया। नारायन्तक के यंत्रों में विद्यमान होकर वह बुध मण्डल पर पहुंचे और विद्याध्ययन किया। स्वाति मुनि के यहां

दोनों ब्रह्मचारियों का अंगद और मेघनाद का प्राण (विद्या) पर विचार विनिमय होता रहता था। वे दोनों संकल्पमयी प्राणायाम, चन्द्र प्राणायाम, शीतली प्राणायाम, अग्नि प्राणायाम और दीपावली सभी जानते थे। मेघनाद ब्रह्मास्त्र, नागपाश, वरुणास्त्र को जानते थे। वह श्रुति प्राण को जानते थे। वह दीपमालिका गान मेघों का राग गाने वाला विज्ञान भी जानते थे। मेघनाद की पत्नी सुलोचना महाराजा शेषनाग की कन्या थी। वह भी अपने पति मेघनाद के समान वैज्ञानिक थी। मेघनाद ने इन्द्र पर विजय प्राप्त की थी, अतः उसका नाम इन्द्रजीत हुआ। इन्द्र से उन्हें एक अस्त्र भी मिला था।

नारायन्तक-

नारायन्तक ने चन्द्रयात्रा की शिक्षा भारद्वाज से प्राप्त की थी। कुम्भकरण और नारायन्तक ने अपनी विज्ञानशाला में चन्द्रभानु यान, गरुड़केतुयान, कृतकयान, कागकेतुयान का निर्माण किया था। कागावेनकेतयान ऐसा था कि लंका से जिस पर विद्यमान होकर पृथ्वी से गति कर रहा है और परिक्रमा करता हुआ चन्द्रमा में बुद्ध मण्डल में आ जाता था। एक समय नारायन्तक देवर्षि नारद के द्वार पहुंचे। वहां महर्षि विभाण्डक वहां थे। नारायन्तक ने कहा मैंने महान यंत्रों का निर्माण किया है, जिसमें बैठकर चन्द्रमा की यात्रा करता हूं। नारद ने उत्तर दिया कि हे नारायन्तक तुमने केवल विज्ञान को जाना है, परन्तु हमने उस विज्ञान को जाना है, जिससे सूर्यलोक और ध्रुव लोकों की यात्रा किया करते हैं।

अक्षय कुमार-

अक्षय कुमार भौतिक विज्ञान से लोकों की गणना करते थे कि यह जो हमारे पृथ्वी मण्डल हैं, इनके बराबर उसके अग्रगण्य में अगरेती भाग में मंगल है। दक्षिण भागों में बुध है, पूर्व भाग में चन्द्रमा है और दक्षिण भाग में शुक्र वर्णन किया है। इसी प्रकार ऊपर के अनुपात सूर्य मण्डल के जितने सौरमण्डल हैं, उन मण्डलों की परिगणना मानी जाती है। अक्षयकुमार जब मन्दोदरी के गर्भ में था, उस समय माता मन्दोदरी

आकाशगंगा और लोक-लोकान्तरों का चिन्तन किया करती थी।

१८. रावण का विशाल साम्राज्य

अहिरावण पातालपुरी (आजकल अमरीका) का राजा था, और नारायन्तक सुधित राज्य (आजकल रूस) का राजा था। अक्षयकुमार अक्षयकुमार रोहिणी नाम चीन और गांधार जिसे आजकल काबुल बिलोच कहते हैं, का राजा था। रावण ने आर्यावर्त पर आक्रमण किया। केवल एक अयोध्या राज्य को छोड़ा था। रावण के राज्य में प्रजा बहुत कष्ट में रहती थी। अतः प्रजा को सुखी बनाने के लिए चरित्रवानों के उत्पत्ति होने लगी।

वेद का ज्ञाता रावण-

रावण ने वेद का अनुपम भाष्य किया था। महर्षि कृतकेतु महाराज को रावण ने बताया कि वेदों में संसार का विज्ञान है। भगवान ज्ञान विज्ञान यह है कि संसार का ज्ञान करो और उसके बाद भौतिक विज्ञान से नहीं देखा जाएगा। आज तुम ज्ञान प्राप्त करो और ज्ञान के बाद आन्तरिक भावना को जानो। इस आत्मा को मेरुदण्ड में ले जाकर इस आत्मा का परमात्मा से मिलान कर। जब यह आत्मा परमात्मा की गोद में जाएगी, तब जानों की संसार का यज्ञ करना सफल हो जाएगा। उस समय यह आत्मा संसार को भलीभांति देख सकता है। इसके सब विज़ान को जानने वाला बन जाता है।

१९. कुक्कट मुनि का लंका परि भ्रमण

रावण के विशेष अनुरोध पर कुक्कट मुनि ने लंका भ्रमण करना स्वीकार किया। राजा रावण कुक्कट मुनि को नाना प्रकार की शालाओं को दर्शन कराते हुए अन्त में अपने पुत्र नारायंतक के पास पहुंचे, जो नित्यप्रति चन्द्रमा की यात्रा करते, और ऋषि से बोले कि मेरे पुत्र नरायन्तक चन्द्रयान बनाते हैं।

महर्षि कुक्कट मुनि ने कहा कि कहो आप कितने समय में चन्द्रमा की यात्रा कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि भगवन एक रात्रि और एक

दिवस में मेरा यान चन्द्रमा पर चला जाता है और इतने ही समय में पृथ्वी पर आ जाता है। इसको कृतक यान भी कहा जाता है। मेरे यहां ऐसा भी यंत्र है, जो यान जब पृथ्वी की परिक्रमा करता है, तो स्वतः ही उसका चित्रण आ जाता है। मेरे यहां 'सोमभाव की किरकिट' नाम का यंत्र है। रावण के यहां अश्विनी कुमार जैसे वैद्यराज थे। रावण के राज्य में अग्नि यंत्रों का निर्माण, जलास्त्रों का निर्माण, चन्द्रमा में यातायात बन गया। मंगल में यातायात बन गया। सर्वत्रता में यातायात बन गया। तो कुक्कट मुनि ने यह कहा कि रावण तुम्हारा राष्ट्र कोई प्रिय लग नहीं रहा है। यहां यंत्रों का निर्माण है, परन्तु चरित्र का निर्माण नहीं। जब तक चरित्रता, मानवता नहीं आ पाती, यह विज्ञान तुम्हारा नाशक बना रहेगा। यह विज्ञान मानव को नष्ट करता रहेगा।

राजा रावण के यहां विशाल यंत्र थे, क्योंकि रावण को भी महर्षि भारद्वाज ने ही शिक्षा प्रदान की थी। इसके बाद रावण ने कुछ शिक्षा महर्षि सोममुक से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने ब्रह्मा से भी शिक्षा ग्रहण की थी। रावण ने शिक्षा से राष्ट्र में विज्ञान का प्रसार किया, अपने पुत्रों और अपने विधाता कुम्भकरण को वैज्ञानिक बनाया।

२०. वैज्ञानिक कुम्भकरण

कुम्भकरण का बाल्यकाल का नाम अश्वनिकेतु था। महर्षि भारद्वाज ने उसका नामकरण कुम्भकरण इसलिए कर दिया, क्योकि वह बलवान था, विशाल हृदय का था। जैसे कुम्भ का जल शीतल होता है, वैसे ही शीतल व सौम्य स्वभाव कुम्भकरण का था। उसका मस्तिष्क इतना विशाल था कि जैसे कुम्भ का आकार होता है। वह निन्द्रा को बहुत सूक्ष्म पान करते थे, क्योंकि वह सदैव विज्ञान में लगे रहते थे। याज्ञिक कुम्भकरण प्रातःकाल यज्ञ करते, यज्ञ में जब स्वाहा करते थे, तो वह 284 प्रकार की औषधियों को इकट्ठी करके सामग्री बनाते थे और वह जो साकल्य था, वनस्पतियां थीं, किसी में अग्निप्रधान, किसी में वायुप्रधान

होती थी। उनका साकल्य बनाकर आहुतियां देते थे। उनके यहां नौ कोण वाली यज्ञशाला थी। उस नौ कोण वाली यज्ञशाला में जब सुगन्धित सामग्री प्रदान की जाती थी, तो उससे जो सुगन्ध उत्पन्न होती थी। उन सुगन्धियों को अपने यंत्रों में एकत्र कर लेते थे, और फिर उन परमाणुओं के द्वारा मंगल की यात्रा करते थे। एक समय जब उन्होंने उड़ान उड़नी प्रारम्भ की तो ऐसा कहा जाता है कि दो दिवस और दो रात्रि में वह मंगल पहुंच गये थे।

कुंभकरण द्वारा निद्रा पर अनुसंधान-

कुम्भकरण ने भारद्वाज मुनि से निद्रा क्या है, जानना चाहा। भारद्वाज मुनि ने कहा कि मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का एक स्थान पर आ जाने का नाम ही निद्रा है। इसको सुषुप्ति कहा जाता है। कुम्भकरण निद्राजित कहलाते थे। योग में निद्रा नहीं होती। योग तो परमात्मा का मिलन होता है। प्रकृति से जो मिलान करता है, परमाणुओं को जो संगठन करता है, परमाणुओं को एक-दूसरे में पिरो देता है, वह निद्रा को प्राप्त नहीं होता।

कुंभकरण का सात्विक भोजन-

भारद्वाज मुनि के द्वारा कुम्भकरण बारह वर्षों तक यौगिक क्रियाओं का अध्ययन करते रहे थे। वह इतने अहिंसा परमो धर्मो थे कि पत्रों का, पुष्पों का पान करते थे। एक समय भारद्वाज मुनि ने उन्हें जाल, पीपल, वट आदि के पांचांग का पान कराया था। उसके बाद बारह वर्ष तक उन्हें योग की विधाओं, दर्शन का अध्ययन और चन्द्रमा के यातायात का वर्णन कराया था।

भारद्वाज मुनि के विशेष शिष्य कुंभकरण-

कुम्भकरण भारद्वाज मुनि के शिष्य थे। उन्होंने गुरु से अंतरिक्ष विज्ञान को जानने की इच्छा प्रकट की। भारद्वाज मुनि ने उन्हें कुछ युक्तियां बतायीं। कुम्भकरण छः माह तक हिमालय की गुफाओं में विज्ञान अनुसंधानरत रहते थे। वह अग्नेय अंतरिक्ष के ऊपर विचार विनिमय कर

रहे थे। अंतरिक्ष के परमाणुओं में अग्नि की पुट लगा रहे थे। वायु के परमाणुओं में अग्नि की पुट लगाकर एक यंत्र उन्होंने अंतरिक्ष में त्यागा था। डेढ़ करोड़ वर्ष की आयु वाला वह यंत्र है। वह आज भी गति कर रहा है। उस यंत्र की यह विशेषत रही कि जिस प्रकार एक लोक दूसरे लोक की परिक्रमा कर रहा है, उसी प्रकार आकाश में वह यंत्र गति कर रहा है। बारह वर्षों तक अनुसंधान करके उन्होंने कुछ अग्नि के परमाणुओं को लेकर के कुछ जल के परमाणुओं को लेकर, कुछ पृथ्वी के पार्थिव कण को लेकर और विशेष वायु के परमाणुओं को लेकर उन्होंने एक यंत्र का निर्माण किया था, जो पूर्व प्रणाली में वृनतकेतु ऋषि हुए थे, उनका उस यंत्र में चित्र आने लगा। उस चित्रवेतु यंत्र में अंतरिक्ष के चित्र आने लगे। वह जिस प्रकार अपने शिष्यों को उपदेश देते थे, उसको कुम्भकरण अपने यंत्रों में देख रहे थे। कुम्भकरण भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला से नाना यंत्रों को पान करते हुए अपनी अस्सीवीं प्रणाली के जो ऋषि हुए हैं, उनके चित्रों को दृष्टिपात कर रहे थे। उस समय के चित्रों का उसी प्रकार का आकार बना हुआ है।

कुंभकरण सूर्यविज्ञान के ज्ञाता-

कुम्भकरण ने भारद्वाज मुनि से सूर्य की किरणों को यंत्रों में लाने का विज्ञान जानना चाहा। महर्षि भारद्वाज के यहां ऐसी विज्ञानशाला थी, जहां सूर्य की किरणों को यंत्रों में लिया जाता था, और उन सूर्य की किरणों से वाहन गति करते थे, जिनमें कोई मंगल की, कोई चन्द्रमा की, और कोई शनि की परिक्रमा कर रहा है। सूर्य की किरणों से यंत्रों में गति रहती थी।

अंतरिक्ष वैज्ञानिक कुंभकरण-

कुम्भकरण, ब्रह्मचारी सुकेता व कबन्धी तीनों महर्षि भारद्वाज की निर्माणशाला में यंत्रों का निर्माण करते रहते थे। भारद्वाज की विज्ञानशाला में ब्रह्मचारी सुकेता महर्षि कुरतुक महराजा की कन्या शबरी और कुम्भकरण इन तीनों ने एक यंत्र का निर्माण किया था, जिसमें विद्यमान होकर

महाराज कुम्भकरण बहत्तर लोकों का भ्रमण करते थे। मुझे याद है कि वह जब पृथ्वी से उड़ान उड़ते तो चन्द्रमा में जाते, चन्द्रमा से उड़ान उड़ते, तो मंगल में चले गये। मंगल से उड़ान उड़ी तो बुध में चले गये, और बुध से उड़ान उड़ी तो शुक्र में चले गये।

कुम्भकरण की रावण को सलाह-

कुम्भकरण ने सबसे पहले रावण से कहा था कि तुम राम से संग्राम मत करो। इससे तुम्हें लाभ नहीं होगा। तुम माता सीता का हरण कर लाये। यह तुम्हारा कार्य नहीं था, यह राजाओं का कर्तव्य नहीं होता। यदि मुझे इस राष्ट्र का विचार न होता, तो मैं तुम्हें अपने अस्त्र-शस्त्रों से नष्ट कर देता। रावण ने कहा तुम कायर हो, मेरे भ्राता नहीं हो। कुम्भकरण ने मृत्यु से पूर्व पश्चाताप किया कि हमने राष्ट्र के जीवों को सताया और कुछ नहीं किया। इस शरीर को त्यागकर अगले लोकों में मुझे प्रकाश अंकुर भी नहीं मिलेगा।

२१. महासंग्राम

युद्ध में परमाणु अस्त्रों का प्रयोग-

भगवान राम महर्षि भारद्वाज के आश्रम में छः माह तक अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा ग्रहण करते रहे। यही कोष उन्हें औरों से भी प्राप्त हुआ था, जिसके बल पर वह रावण जैसे साम्राज्यवादी से संग्राम करते रहे। उन्होंने सुग्रीव से मित्रता की। उस मैत्री के बल से रावण से संग्राम किया। एक यंत्र रावण के काल में राम ने त्यागा था। उस यंत्र में परमाणु शक्ति थी। मेघनाद के पास भी परमाणु शक्ति थी, जो प्रहार रूप में लाए तो भगवान राम ने चन्द्रमा की सहायता से महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में जिस यंत्र का निर्माण किया, वह यंत्र चन्द्रवास केतु यंत्र था। इसको त्यागने से मेघनाद की जितनी परमाणु शक्ति थी, वह सब दमन हो गयी।

लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध-

त्रेताकाल में जब राम-रावण युद्ध चल रहा था, तो रावण पुत्र

मेघनाद ने इन्द्र से जीता हुआ शक्ति शस्त्र त्यागकर मेघों से अग्निवर्षा कर, लक्ष्मण की सेना नष्ट कर दी। तब राम ने वरुणास्त्र से अग्नि तत्व को समाप्त कर दिया। पुनः युद्ध हुआ, तो मेघनाद ने एक यंत्र का प्रहार कर, संसार को रात्रिमय कर दिया, तब लक्ष्मण ने शबरी से प्राप्त (भारद्वाज निर्मित) यंत्र त्यागा और पुनः सूर्य का प्रकाश कर दिया।

लक्ष्मण मूर्च्छा-

जब पुनः युद्ध चला, तो मेघनाद ने एक शक्ति का प्रहार किया। लक्ष्मण मूर्छित हो गये। प्राणशक्ति शून्य को प्राप्त हो गयी, तो लक्ष्मण को राम के कक्ष में ले गये। महाराजा विभीषण के परामर्श से रावण के वैद्य सुघन्वा को उनके विश्राम स्थल से हनुमान जी लाये। सुघन्वा से अनुनय विनय कर वैद्य औषधि ज्ञान प्राप्त किया। वैद्यराज ने उस समय हनुमानजी से कहा कि नील पर्वत पर चले जाओ, वहां सुलक्ष्णा नाम की एक बूटी है, उसी के साथ एक संगृत नाम की औषधि है। इन दोनों औषधियों को लाओ। सूर्यकिरण उन औषधियों पर न पड़ने पाए, प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व आना है और औषधि प्रयोग करना है। हनुमान जी ने अनेक बाधाओं को पार करते हुए औषधि लाकर दी। परमात्मा का चिन्तन करते हुए सुलक्षण औषधि, श्वेता नामक औषधि, सम्मू नामक औषधि तीनों का त्रिकोण बनाकर और जलों के साथ में उनको प्रदान करने से वह जो शक्ति थी, उसका प्रभाव समाप्त हो गया। जैसे सूर्य की वैष्णव नाम की किरण उसके (औषध) गुणों को अपने में धारण करने लगती है, और रात्रि में उस धरोहर को उसमें परिणत कर देती थी। लक्ष्मण जागरूक हो गये और उनका बल शक्ति पुनः प्राप्त हो गयी। प्रातःकाल सूर्य उदित होते ही उस औषधि का गुण समाप्त हो गया। लक्ष्मण अपने स्वरूप में आ गये और सुघन्वा अपने आसन पर चले गये। सुघन्वा ने बारह-बारह वर्षों के पच्चीस अनुष्ठान किये थे। वह सदा साधना में रत रहते और औषधि का पान करते रहते थे। उस समय सुघन्वा की आयु सत्रह सौ वर्ष थी।

अहिरावण वध और मकरध्वज का राजतिलक-

पातालपुरी रावण के पुत्र अहिरावण राज्य करते थे। मकरध्वज उनके यहां द्वारपाल रहते थे। वह हनुमान का पुत्र था। हनुमान का संस्कार महाराजा सुग्रीव की कन्या रोहिणी से हुआ था और उससे एक बालक उत्पन्न हुआ था, जिसको मकरध्वज कहते हैं। हनुमान जी एक पुत्र उत्पन्न करके जीवनभर ब्रह्मचारी रहे। भगवान राम ने अहिरावण को नष्ट किया, और उसके पश्चात मकरध्वज पातालपुरी के राजा बने।

रावण के पुत्रों के निधन पर रावण-मन्दोदरी संवाद-

रावण के पुत्रों का निधन होने पर मन्दोदरी ने रावण से कहा कि हमसे पहले तो हमारे वंश (पुत्रों) का निधन हो गया, क्या कारण है। रावण ने मंदोदरी से ही कारण बताने को कहा, तो मंदोदरी ने कहा कि जो दूसरों की कन्या या पत्नी के साथ छल करता है, उसका यही परिणाम होता है। रावण ने कहा नहीं कोई और कारण है। मंदोदरी ने कहा वेद की विद्या तो हमारे पास रही, किंतु हम राष्ट्र को चरित्रवान नहीं बना सके। रावण ने कहा मैं राष्ट्र में चरित्र नहीं ला सका और जिसका चरित्र व संयम नष्ट हो जता है, अन्तत: विनाश को प्राप्त होता है।

रावण की नाभि में अमृतकुण्ड का रहस्य-

महाराज शिव ने एक यंत्र का निर्माण किया था, जिसमें स्वरशक्ति थी। जब रावण को यह पता चला कि महाराजा शिव के पास ऐसी अमोघ शक्ति है, और यह यंत्र उन्होंने मार्कण्डेय ऋषि की सहायता से प्राप्त किया है, उस यंत्र को धारण कर, युद्ध करने वाले योद्धा का कोई वध नहीं कर सकता। रावण ने शिव से प्रार्थना चरणों की वन्दना की। प्रसन्न होने पर शिव ने वह यंत्र रावण को प्रदान कर दिया। इस यंत्र का नाभि और हृदय से समन्वय रहता था। रावण ने यंत्र को लाकर अपने गृह में एक स्तम्भ के मध्य में स्थिर कर दिया था, परन्तु यंत्र की तरंगें उन्हें तरंगित करती रहतीं। मानों जब तक तरंगें उसमें हैं, तब तक वह यंत्र नाभि और हृदय केन्द्र को सत्ता प्रदान करता रहता। उस मानव का वध नहीं हो सकता था। महाराजा शिव रावण के आचार्य भी थे, और वह गुरु भी

कहलाते थे। जब राजा रावण और भगवान राम का संग्राम हुआ तो राम ने सभा में आश्चर्य से कहा कि रावण का वध नहीं हो रहा है, तो अब क्या करें? विभीषण की सलाह पर जामवंत और हनुमान को ब्राह्मण वेश बनाकर शिव के द्वार भेजा जाए। वह महाराजा शिव से प्रतीत करके आए कि रावण का वध क्यों नहीं हो रहा है? क्या राष्ट्र में अंधेरा ही रहेगा, प्रकाश नहीं आएगा? महाराज जामवंत और हनुमान भ्रमण करते हुए कैलाश पहुंचे, जहां शिव राज करते थे। अतिथि सेवा कर शिव ने ब्राह्मणों से आगमन का कारण पूछा तो उन्होंने राष्ट्रीय गोष्ठी में रात्रि में प्रश्न किया कि राम कैसे विजयी होंगे? जामवंत ने कहा कि क्या आप रावण को जीवित ही रखना चाहते हैं? शिव ने नहीं में उत्तर दिया।

शिव ने उत्तर दिया, राजा रावण ने समाज के चरित्र की रक्षा न करके समाज का दुरुपयोग किया है। महाराजा जामवंत और हनुमान ने अपना भेद बताया कि हम ब्राह्मण रूप में जामवंत और हनुमान हैं। हम इसलिए आये हैं कि भगवान राम ने आपको निमंत्रित किया है कि उनकी सभा में अपना विचार प्रकट करें कि राम को क्या करना चाहिए। शिव ने वहां से गमन किया। भ्रमण करते हुए अपने यानों में बैठ महाराजा शिव राम के पास आ गये। विचार-विनिमय करते हुए राम ने शिवचरणों की विन्दना की और कहा कि मैं रावण का ह्रास कैसे कर सकता हूं? बताइए मैं क्या करूं? शिव ने वाक्य स्वीकार कर कहा कि राम तुमसे रावण विजय नहीं हो सकेगा। राम ने पूछा क्यों? शिव बोले क्योंकि उसकी नाभि में अमृत कहलाया जाता है। उसने सबसे पहले बाल्यकाल में योगाभ्यास किया, जब मेरे संपर्क में आये, तो इनको हमने एक यंत्र दिया था और उसने वह महारानी मन्दोदरी को समर्पित किया था और उस यंत्र में एक विशेषता है कि इनका राष्ट्रगृह है और राष्ट्रगृह में एक स्तम्भ है (मध्य का)। उसमें यह यंत्र लगा हुआ है। इसकी नाभि की जो जीवनशक्ति है, उसमें यंत्र का समन्वय है। इसलिए कोई यंत्र यहां काम नहीं कर पाते। इस यंत्र को जामवंत और हनुमान महारानी मन्दोदरी की वन्दना कर, दान में

ले सकते हैं, क्योंकि मन्दोदरी जहां विदुषी है, पवित्र है, वहां दानी भी बहुत है। यदि उसने अपने सुहाग का दान तुम्हें प्रदान कर दिया, तो तुम रावण को किसी समय विजय कर सकते हो, और यदि सुहाग प्रदान नहीं किया, तो तुम रावण को विजय नहीं कर सकते। हे राम! मार्कण्डेय ऋषि ने उस यंत्र का निर्माण किया था। जिस समय अंतरिक्ष में जाकर हमने यंत्र को दृष्टिपात किया था, जहां पृथ्वी और चन्द्रमा, दोनों की आकर्षण शक्ति का समन्वय होता है, वहां एक यंत्र विद्यमान था, और यंत्र में महर्षि मार्कण्डेय और महर्षि शौनक ये दोनों अनुसंधान कर रहे थे। वहां इस यंत्र का निर्माण हुआ था, जो उन्होंने हमें प्रदान किया। हमने यह रावण को प्रदान किया था। यह तुमसे लिया जाए तो अपने में अपना लो, अन्यथा इसकी मृत्यु नहीं होगी।

महाराजा शिव परामर्श देकर यान से कैलाश गये। राम ने रात्रि-चिन्तन के पश्चात जामवंत और हनुमान को मन्दोदरी से भिक्षाप्राप्ति हेतु भेजा। जामवंत और हनुमान ब्राह्मण वेश में भ्रमण करते हुए रावण के कक्ष में आयें। रावण ने उनका स्वागत किया। कहा- आओ विराजो। रावण से दोनों ने चिन्ता का कारण पूछा, तो रावण ने कहा कि मैं लंका राष्ट्र में अकेला रहकर क्या करूंगा? इनकी एक कृति लेकर हनुमान ने कहा आप रावण हैं और राम रावण की एक राशि है। तुम राम के आश्रित हो जाओ। रावण ने कहा ऐसा नहीं हो सकता। मैं उनसे संधि नहीं करूंगा। तत्पश्चात् वह दोनों मन्दोदरी के पास पहुंचे, मन्दोदरी ने स्वागत किया।

जामवंत और हनुमान ने कहा हम ब्राह्मण हैं। हम तुम्हारा कुछ भी पान नहीं करेंगे। हम कुछ दान प्राप्त करने आये हैं। दान प्राप्त होगा, तो तुम्हारा अन्नादि पान करेंगे। मन्दोदरी ने कहा, क्या आप वास्तव में ब्राह्मण हो? उन्होंने कहा, हां। मन्दोदरी ने कहा राजलक्ष्मियां अपने वचनों का पालन करती हैं, आप जो चाहो, मांगो। उन दोनों ने एक स्वर में कहा कि हे दिव्या, तुम्हारे इस खम्भे में जो यंत्र विद्यमान है, हम उस यंत्र को चाहते हैं। अन्यथा हम भोजन नहीं करेंगे।

मन्दोदरी वेदज्ञ थी, वह विचारने लगी कि यह तो मेरा सुहाग है। हे ब्राह्मणों बताओ कि तुम्हें किसने कहा है कि यह यंत्र यहां रखा है। यह तो मुझे और मेरे स्वामी को ही प्रतीत है, ऐसा प्रतीत होता है कि तुम ब्राह्मण नहीं हो। उन्होंने कहा हमें शिव ने यह कहा है। मन्दोदरी ने सोचा कि जब शिव ही मेरे सुहाग को नहीं चाहते, तो मैं यह यंत्र प्रदान कर सकती हूं। शिव तो हमारे राष्ट्र के सखा हैं और लंका के वह सर्वस्व हैं। वह कृतोधर्मा के पुत्र कहलाते हैं, जिसके राज्य में इतने ऊंचे विचारों वाली प्रजा हो, पर्वतीय क्षेत्रों में जो राज करने वाला हो, उसे शिव कहते हैं। तब शिव के यहां से एक आकाशवाणी यंत्रों द्वारा मिली कि 'जामवंत इसे समुद्र में अर्पित कर दो, अन्यथा यह शक्ति देता रहेगा।' उस यंत्र को लेकर के जो नाभि कुम्भ को शक्ति देता था, जामवंत और हनुमान ने उसे समुद्र के मध्य में विद्यमान कर दिया। वह यंत्र वहीं समाप्त हो गया।

रावण वध-

अब जब रावण से पुनः संग्राम हुआ, तो उसे वह शक्ति आनी समाप्त हो गयी। जब राम ने यंत्रों का प्रहार किया, तो राजा रावण ने विचारा कि आज मुझे शक्ति प्राप्त नहीं हो रही। जब राम ने कहा रावण आज तुम्हारा वध होना ही है। राम ने रावण को शस्त्रों से बद्ध कर दिया, तब रावण रसातल को चला गया।

रावण की नाभि में अमृत का एक भण्डार है तथा एक भण्डार तपस्या का भी था, जो बाल्यकाल में ब्रह्मा से प्राप्त था। ब्रह्मा एक उपाधि है। ब्रह्मा परमपिता को भी कहते हैं, परन्तु ब्रह्मा लौकिकता में, रूढ़ि में, वेद के प्रकाण्ड विद्वान, वेद के मर्मज्ञ को भी ब्रह्मा की उपाधि प्रदान की जाती है।

मरणासन्न रावण द्वारा दीक्षा-

राम ने रावण वध के बाद लक्ष्मण को रावण से नीति जानने भेजा। परन्तु लक्ष्मण वापस आ गये। दुबारा राम के साथ गये, तब रावण ने कहा राजा के राष्ट्र में विज्ञान होना चाहिए, परन्तु उसका दुरुपयोग नहीं होना

चाहिए, क्योंकि विज्ञान का दुरुपयोग होने से राष्ट्र का विनाश हो जाता है। विज्ञान का दुरुपयोग होने से समाज अकर्मण्य हो जाता है और रक्तभरी क्रान्ति होती है। तत्पश्चात रावण ने कहा कि हे राम यदि राष्ट्र को ऊंचा बनाना है, तो राजा को आलस्य और प्रमादी नहीं होना चाहिए। जब आलस्य और प्रमाद आ जाएगा, दूसरों की कन्याओं और पुत्रियों पर अत्याचार शुरु होगा, तो राष्ट्र आज नहीं तो कल अवश्य नष्ट हो जाएगा। हे राम कार्य को कल पर मत टालो, तत्काल कर लो। कार्य को कल पर छोड़ना मूर्खता है, अकर्मण्यता है। आज बुद्धिमानों का ह्रास हो रहा है। राष्ट्रनिर्माण बुद्धिमानों से होता है। नम्रता और विवेक से राष्ट्र ऊंचा बनां करता है। आज मेरे सब आक्रमणों और पराक्रमो भेद ने तुम्हें विभीषण ने प्रदान किया है। जब मैं ब्रह्मा के आश्रम में पढ़ता था, तो मैंने गुरु की पुत्री पर आक्रमण किया, तो उसने मुझे शाप दिया था। मेरी धृष्टता से जब उसकी मृत्यु होने लगी तो उसने कहा कि वरुण ब्रह्मचारी तू भी ऐसे ही विनाश को प्राप्त होगा। दूसरा पाप जो वनचर माता पिता की आज्ञा से आये थे, उनको व्याकुल करके मैंने किया है। (9-3-77)

विजयदशमी की मान्यता-

यह वह दिवस है जिस दिन राम ने रावण का वध किया। भगवान राम आज उत्तीर्ण हो गये थे। इसी दिन विश्वामित्र ने धनुर्याग कर, क्षत्रिय बल को जाग्रत किया। भारद्वाज आश्रम में कबन्धी ने अग्नि का निर्माण किया। इस दिन लक्ष्मी पूजन किया जाता है। कृषक जन नया अन्न घर में लाते हैं। घर में लाकर उसका साकल्य बनाकर ब्रह्मा को अर्पित करते हैं।

२२. रावण के विनाश के कारण

जब स्वार्थ अति बढ़ जाता है, वैश्यजन, द्रव्यपति संग्रह की पराकाष्ठा तक पहुंच जाते हैं, निर्धन व्यक्तियों में निर्धनता बढ़ जाती है, तब निर्धनों की हृदयवेदना से रक्त-क्रान्ति होती है, और विनाश का कारण बनती है। रावण के राज्य में भी यही हुआ था।

रावण के काल में ईश्वर के नामों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ियां बन गयी थीं। ईश्वर के नाम पर लंका अग्नि का काण्ड बन गयी। राम ने इस मर्यादा को जाना, उन्होंने रूढ़ियों को नष्ट कर, वैदिक प्रकाश को लाये।

रावण ने कहा था कि मैं विजयी बनूंगा, राम को नहीं आने दूंगा, यह अभिमान उसे ले बैठा।

समाज का, राष्ट्र का विनाश होता है, जब पुत्रियों का श्रृंगार नष्ट किया जाता है। रावण ने सीता के चरित्र को कुदृष्टिपात किया। परिणाम में राम-रावण युद्ध में लंका जलकर राख हो गयी। पूरा राष्ट्र समाप्त हो गया।

२३. राम-रावण तुलना

राम में चरित्र और आत्मिक बल- रावण बलवान और वैज्ञानिक था। राम वैज्ञानिक थे, यौगिक थे, तथा उनमें आत्मिक बल था। रावण में आत्मबल नहीं था, इसलिए राम रावण से अधिक शक्तिशाली थे। रावण में चरित्र नहीं था। परन्तु राम में चरित्र और मानववाद था। राम ने जंगल के लोगों को अपनाया।

पुरुषार्थी राम- राम जानते थे कि परमात्मा ने मुझे यह शरीर दूसरों की सेवा करने के लिए दिया है। उन्होंने अपनी आध्यात्मिकता और यौगिकता से जाना कि यह शरीर माता-पिता की आज्ञा पालन हेतु दिया है। रावण दूसरों के द्रव्य को अपने में आकर्षित कर अपनी आनन्दित वार्ताओं के भोग को भोगता था।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम-राम ने आज्ञापालन किया, योगी महान आत्मा बने। राज्य के स्थान पर वनवास स्वीकार कर, माता की आज्ञा का पालन किया। माता की आज्ञा पाकर राम ने पिता के वियोग को नहीं जाना, केवल कर्तव्य मानकर वन चले गये।

वैज्ञानिक राम- रावण जैसा अभी तक कोई वैज्ञानिक नहीं बना,

जिसके कारागार में सब देवता कार्य करते थे। उससे निचले स्थान में राम भी बड़े वैज्ञानिक थे। उन्होंने पृथ्वी विज्ञान को जाना कि यह भूमि कैसी है, इस भूमि से हम क्या निकाल सकते हैं। जब माता अहिल्या का राम ने पुनः उत्थान किया, ज़ो बज्रतुल्य भूमि अहिल्या थी, उसको राम ने वैज्ञानिक दृष्टि से देखा और निषाद राजा से कहकर वहां कृषि करायी। उसमें अन्न उत्पन्न हो गया। राम तपस्वी थे, रावण तपस्वी नहीं था। राम ने रावण साम्राज्य को नष्ट कर दिया।

उदार संस्कृति के पोषक राम-राम ने संसार में अपनी वैदिक संस्कृति का प्रसार कर संसार को पवित्र और उदार बनाया। रावण ने इन्द्रपुरी, पातालपुरी आदि में अपना साम्राज्य बढ़ाया। संस्कृति को नहीं अपनाया।

सूर्यवंशी राम और चन्द्रवंशी रावण- मानव समाज़ दो विभागों में विभक्त हुआ। एक चन्द्रवंशी और दूसरा सूर्यवंशी। राम सूर्यवंशी और रावण चंद्रवंशी और शैवमत को स्वीकारते हैं। रावण का राष्ट्र नाना प्रकार की रूढ़ियों में बंट गया। रावण का राष्ट्र विज्ञान में पूर्ण था, परन्तु मान्यताओं में भिन्नता थी। अतः वह नष्ट हो गया। रावण राज्य में लगभग पचास रूढ़ियां थीं, जो रावण राष्ट्र के पतन का कारण बनीं।

राम के बुद्धिमान सहयोगी :

हनुमान धर्मनीतिज्ञ धर्मात्मा लक्ष्मण- लंका विजय के बाद विभीषण ने राम से अपने यहां अन्न ग्रहण करने का अनुरोध किया। तब हनुमान जी ने एकान्त में राम से कहा भगवन यह राष्ट्रीयता है। इसे आप स्वीकार न करें। विभीषण हमारा मित्र ही बना रहेगा। विभीषण जी लंका में चले गये, राम अयोध्या को चले गये। हनुमान जी को उन्होंने अपना सर्वोपरि मंत्री बनाया और उनको सभी प्रकार की उपाधियां प्रदान कीं। भगवान राम ने विभीषण को लंका का स्वामी बनाया। विभीषण ने चलते समय राम को कुछ उपहार देना चाहा। उस समय लक्ष्मण ने कहा हे राम! आप चाहें तो ग्रहण कर लें, लेकिन न [illegible] यह कहती है, और न

राजधर्म यह कहता है कि जिसको आपने दान दे दिया हो, उस दान में से आप कुछ लेवें, यह आपके योग्य नहीं। राम ने विभीषण को अपने राज्य का पालन करने की सलाह दी। अपनी मर्यादा का पालन किया।

वैदिक संस्कृति के प्रसारक राम-

चारों वेदों के ज्ञाता, महावैज्ञानिक रावण को राम ने नष्ट किया। विभीषण को लंकापति बनाया। रावणपुत्र नारायंतक, जो मधुतराष्ट्र (रूस) के राजा थे, नष्ट कर, सर्वांग नाम के राजा को राजा बनाया तथा पातालपुरी में रावणपुत्र अहिरावण को नष्टकर हनुमान पुत्र मकरध्वज को राज्य देकर सर्वत्र अपनी संस्कृति का प्रसार कर अयोध्या लौटे।

याज्ञिक और देवी पूजक राम-

उनके यहां वर्ष में दो समय देवीपूजा की जाती थी। ये दोनों समय ऐसे हैं, जिसमें पृथ्वी के गर्भ में बीज डाले जाते हैं। एक यज्ञ में खेती से अन्न पैदा होकर घर में आता है, तो घर में यज्ञ होना चाहिए। वही प्रकृति माता की पूजा है। देवी पूजा नहीं, हमारी अखण्ड ज्योति जलती रहे, यज्ञ होते रहते थे, जिससे समाज और राष्ट्र ऊंचा बना करता था।

२४. राम की अयोध्या वापसी

जब राम लंका को विजय कर, आयोध्या में आये, ऋषियों और अयोध्यावासियों ने उनका स्वागत किया, तत्पश्चात् उन्होंने देवीयज्ञ किया।

भरत का राम से राज्यग्रहण अनुरोध-

लंका विजय के बाद जब राम अपने कक्ष में अयोध्या में विराजमान हो गये, तब तीसरे दिन महात्मा भरत उनके पास आये, और और राज्य को अपनाने की प्रार्थना की। भरत ने याचनायुक्त निवेदन किया कि आप राष्ट्र को अपनाइए और इसे पृथ्वी को ऊंचा राष्ट्र बनाइए।

राम की राज्य-ग्रहण असमर्थता-

राम ने कहा कि भरत मैं अभी राष्ट्र के सुयोग्य नहीं हूं, क्योंकि जो मानव संग्राम करके आता है, उसके मन में कुछ समय तक रजोगुण

होता है। संचालन हेतु सतोगुण प्रधान होना चाहिए। भरत ने कहा मैं राजाओं और ऋषि मुनियों को निमंत्रित करने जा रहा हूं। राम ने कहा प्रिय तुम ऐसा ही करो।

भरत द्वारा ऋषियों की सभा-

भरत ने राम-आज्ञा का पालन करते हुए ऋषि-मुनियों को निमंत्रित किया। महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि वैशम्पायन, महात्माकुक्कट आदि ऋषियों का आगमन हुआ। हिमालय अधिपति शिव और ब्रह्मचारी कबन्धी, महर्षि पणपेतु, भारद्वाज आदि का आगमन हुआ। महर्षि विभाण्डक और महर्षि विचिका और उद्धालक गोत्र के ऋषि आये। महाराजा शिव और महर्षि श्वेका आये और सब ने अपने आसन ग्रहण किये। सबसे ऊर्ध्व आसन पर महर्षि वशिष्ठ राजपुरोहित विद्यमान हुए। उसी सभा में लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत और राम और सभी राजमाताएं विद्यमान थीं। राज्य के कृषक, वैज्ञानिक विद्यमान थे। महाराजा भरत ने महाराज शिव को सभापति बनाया। महाराजा शिव और पुरोहित वशिष्ठ साथ-साथ विद्यमान हुए।

सभा में भरत की प्रार्थना-

सभा प्रारम्भ हुई। वशिष्ठ मुनि ने कहा भगवन भरत की इच्छा यह है कि राम अब राष्ट्र को अपनाने वाले बनें, क्योंकि बहुत समय हो गया है भरत अपनी गुफा में रहते हैं, क्योंकि राम और सीता का वनवास में पृथ्वी पर आसन रहता था। महाराज शिव ने राजाओं का विचार जानना चाहा तथा राम का विचार जानना चाहा, क्योंकि यह उन्हीं का विषय है, तथा वह स्वयं ज्ञानी मर्यादारत हैं।

भगवान राम के विचार तथा तपस्या की आज्ञा-

राम ने कहा आचार्यों, गुरुओं, ऋषिवर, तपस्वियों मेरी इच्छा यह है कि मैं अभी राष्ट्र के सुयोग्य नहीं हूं। महाराजा वशिष्ठ बोले कि इसका कारण क्या है? राम ने कहा कि मैंने लंका को गुरु आदेश (कर्तव्यहीन राजा को नष्ट करना) विजय किया है। युद्ध से कहीं मुझे रजोगुण आया,

कहीं तमोगुण, कहीं अपमान हुआ, कहीं मैं निराश हुआ था। उन संस्कारों की प्रतिभा मेरे अन्तःकरण में विद्यमान है। इसलिए मेरी इच्छा यही है कि मैं तपस्या में रत होना चाहता हूं। तदोपरांत राज्य का अधिकारी बनूंगा। भगवान राम ने बार-बार तपस्या गमन की सार्थकता बतायी तथा तपस्या द्वारा अपना शुद्धिकरण किया, तब प्रजापति शिव ने राम को धन्य कहा कि तुम तपस्या हेतु राष्ट्र को त्याग रहे हो। गुरु वशिष्ठ ने पुरोहितता करते रहना स्वीकार किया।

अयोध्या में तपस्वी राजाओं की परम्परा-

राम ने कहा कि अयोध्यापुरी में जो भी राजा हुआ है, वह ब्रह्मवेत्ता हुआ है। मेरे पिता दशरथ दसों इन्द्रियों को विजय करने वाले थे। जब वह राजा बने, मेरे महापिता भी महान तपस्वी थे। रघु तो राजा नहीं, महात्मा थे। मेरे महापिता दिलीप गोमेध याग करते रहे। कामधेनु के पीछे बारह वर्ष तक तपस्वी बने रहे। मेरे महापिता हरिश्चन्द्र ने स्वप्न में ही राज्य महात्माओं को दे दिया। महापिता सुखगंजय और राजा सगर हुए हैं। सभी बुद्धिमान और तपस्वी हुए हैं। इसीलिए मैं भी तपस्या करना चाहता हूं। पवित्र राजा का राष्ट्र स्वयं ही चलता रहता है। वहां कोई रक्तक्रान्ति नहीं हुआ करती।

२५. राम का तपस्याकाल

राम वन को चले गये और वन में तपस्या करने लगे। पत्र-पुष्पों औषधियों का पान करते, जिससे उनका रजोगुण कुछ समय बाद समाप्त हो गया। इन्द्रिय-संयम की विद्या जानने के लिए वन में उसने महर्षि मित्र, महर्षि लोमश और काकभुषुण्ड जी से निवेदन किया कि मैं तपस्या हेतु आया हूं, मेरा मार्गदर्शन कीजिए।

महर्षि लोमश का राम को अन्न पवित्रता का आदेश-

लोमश मुनि ने कहा कि तुम अन्न को पवित्र बनाओ। तुम यह जो कनक है, अन्नाद है, इसे पृथ्वी में से एकत्रित करो। उसको जल में वृत

करते हुए उसे प्रातःकालीन खरल करने के बाद अग्नि में तपा करके उसका पान करो। जब तक तुम्हारा अन्न पवित्र नहीं होगा, तब तक मन की धारा पवित्र नहीं होगी। मन से जो अन्तःकरण में संस्कार पैदा हो गये हैं, उनको भोक्तव्य आहार द्वारा समाप्त कर भोक्तव्यादि बनें। राम ने वही किया। उस अन्न को ग्रहण करने से उन्हें अन्तरात्मा से ज्ञान होने लगा। भगवान राम ने बारह वर्ष तक तप किया, तो जो प्रतिभा नष्ट हो गयी थी, वह पुनः जाग्रत हो गयी। महर्षि लोमश और काकभुषुण्ड जी से शिक्षा पाते रहे। राजा के राष्ट्र में विवेकी और वेदज्ञ पुरुष होने चाहिए, तभी राष्ट्र ऊंचा बनता है, अन्यथा राष्ट्र अपंग बनकर नष्ट हो जाता है। विजय करने के बाद मानव को तपस्या करनी चाहिए, जिससे उसे अभिमान न आ जाए। यदि अभिमान आ गया, तो विजय विजय नहीं रहेगी। राम तपस्या में परिणित हो गये और महर्षि लोमश, महर्षि काकभुषुण्ड और महर्षि वैशम्पायन तीनों के यहां आवागमन और विचारधाराएं प्रारम्भ होती रहीं।

तपस्या काल में शिव पार्वती से भेंट-

जब राम तप कर रहे थे, तप समाप्त होने वाला था, तो शिव और पार्वती भ्रमण करते हुए राम के आसन पर दण्डक वन में पहुंचे। राम ने चरण स्पर्श कर कहा आप तो मेरे प्राणप्रदाता और प्राणों के प्रेरक हो। आपने प्रेरणा दी और ऋषि-मुनि के मध्य में तप करने को कहा। मैं अब मोक्ष मार्ग को अपनाना चाहता हूं। संसार के विडम्बनावाद में नहीं जाना चाहता हूं। महाराजा शिव ने कहा नहीं, देखो तपस्या करके ही राजा होते हैं। यदि राजा के हृदय से तप को निकाल दिया जाए, तो राजा का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। हे राजन! तप ही तो राज्य करता है, राष्ट्र का एकीकरण करता है। यदि तप नहीं होगा, तो राष्ट्र में स्वार्थवाद आ जाएगा, और राष्ट्र का नाश हो जाएगा। आप राज्य का पालन कीजिए। समाज में जनता जनार्दन प्रजा को शिक्षा दो। राष्ट्र को ऊंचा बनाओ।

तपस्या काल में वशिष्ठ के उपदेश-

महात्मा वशिष्ठ और अरुन्धती एक समय राम से मिलने जा

पहुंचे। राम ने उनके चरणों की पादुका को जल से स्पर्श कर उस जल का आचमन किया। राम तपस्या से मन को पवित्र बना रहे हैं, क्योंकि मन को पवित्र बनाने का नाम ही शोध तप है। प्राणों का शोधन करना ही तप होता हैं वशिष्ठ ने राम से इतना करने का कारण पूछा। तब राम ने कहा प्रभु मैंने रावण से संग्राम किया, उससे मेरी रजोगुणी और तमोगुणी प्रवृत्ति हो गयी। मैंने लंका के प्राणी मात्र को नष्ट किया है। मैं पापाचार में परिणत हो गया हूं। मेरे अन्त:करण में जो संस्कार आ गये हैं, मैं उन्हें नष्ट कर रहा हूं।

राष्ट्रवाद पर विचार-विनिमय-

भगवान राम का जब बारह वर्ष का तप पूर्ण हो गया, तो भयंकर वन में ही विचारवानों का मानव समाज उपस्थित हुआ। उन्होंने कहा कि राम अब तुम राष्ट्र को भोगो। राम ने कहा राष्ट्र तो मैं भोगने को तत्पर हूं। परन्तु मेरी समझ में नहीं आ रहा कि यह राष्ट्र क्या है, जिसे मैं भोगूं। उन्होने कहा अपने पर अनुशासन करना, अपने प्राणों को संयम में लाने का नाम राष्ट्र है। राम ने कहा मैं राष्ट्रवाद को जानना चाहता हूं। राष्ट्रवाद वास्तव में अपने ऊपर अनुशासन करने को कहते हैं। बाह्य जगत में राष्ट्रवाद उसे कहते हैं, जहां राष्ट्र की प्रजा में महानता और शांति की स्थापना हो, राजा के राष्ट्र में प्रजा और राष्ट्र एक ही रस रहने चाहिए। उसे राष्ट्रवाद कहते हैं। राष्ट्रवाद वह है, जिस राजा के राज्य में वेदज्ञ हों, विवेकी पुरुष हों। जिस राष्ट्र में विवेकी पुरुष नहीं होते तथा जिस राष्ट्र में महापुरुष त्याग और तपस्या में रत नहीं होते, उस राजा का राष्ट्र नग्न रह जाता है। धर्म ही राष्ट्र का प्राण कहलाता है। धर्म देवताओं की ध्वनि है, जो राष्ट्र को उन्नत बनाती है। राष्ट्र वही कहलाता है, जहां हमें मानवीयता को उर्ध्वा में गमन करा, इस सागर से पार होने का मानव प्रयास करता है। वशिष्ठ ने कहा हे राम राष्ट्रवाद उसे कहते हैं जहां धर्म और मानवीयता की रक्षा होती है। जहां मेरी पुत्रियों को पूजिता की दृष्टि से दृष्टिपात किया जाता है और राष्ट्र के एक छोर से दूसरे छोर तक मेरी

पुत्री चली जाए, कोई भी उसे कुदृष्टिपात करने वाला नहीं होना चाहिए।

आदर्श राष्ट्रवाद का क्रियात्मक रूप-

राम ने राष्ट्रवाद को क्रियारूप देने की विधि जाननी चाही, तब वशिष्ठ ने कहा कि स्वयं इस प्रकार के बन जाओ तो कार्यरूप स्वत: आता है। जब अपने में सूक्ष्मता रहेगी, तो जगत सूक्ष्म बनेगा। जब मानव स्वयं दार्शनिक बनेगा, तो मानव समाज भी दार्शनिक बन जाएगा। जब अपने में मृत्यु को विजय करने वाले बनेंगे, तो संसार मृत्यंजयी बन जाएगा। अपने में ब्रह्मज्ञान की चर्चा करने से संसार ब्रह्मज्ञानी बन जाएगा।

अपनेपन को विचारते हुए परमात्मा के जगत में अपने को स्वीकार करो। वही राष्ट्र पवित्र बनता है, प्रजा उसी के अनुसार बरतने लगती है। और जब राजा इस प्रकार का नहीं होगा, तो प्रजा नहीं बरतेगी, तो राजा केवल आलस्य प्रमाद में परिणित हो जाएगा। समाज भी उसी प्रकार के अधिकार की पुकार करने लगेगा, अधिकार ही चाहेगा, परन्तु कर्तव्य नष्ट हो जाएगा।

अयोध्या के राजवेताओं को राम के उपदेश-

जब राम अपनी तपस्या पूरी कर रहे थे, तो अयोध्या के राजवेताओं ने वन में जाकर उनसे राज्य संभालने और मार्गदर्शन की प्रार्थना की। राम ने कहा जब सब को ज्ञान हो जाएगा, ब्रह्मज्ञानी बन जाएंगे, कर्मकाण्ड में समाज परिणित हो जाएगा, तो अनुशासन की जरूरत नहीं रहेगी। प्रत्येक मानव को अपने कर्तव्य में लीन हो जाना चाहिए, अहिंसा में परिणित हो जाना चाहिए। हिंसा में राजा और प्रजा दोनों रहें, हे ब्रह्मवेताओं, राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए तत्पर हो जाओ। प्रत्येक गृह से वेदपाठ की ध्वनि और सुगन्धि आनी चाहिए। (16-5-90 दिल्ली)

राम के तपस्या काल में भरत द्वारा कर्तव्यपालन-

जब राम वनों में तपस्या करते रहे, ऋषि मुनि और साधारण प्राणी जब चाहे दर्शन करते, भरत भी सुबह, शाम प्रजा में भ्रमण कर, उनका दुख दर्द जानते थे। जब राजा प्रजा में नहीं जाएगा, तो वह निकृष्टता को

प्राप्त होगा। जब राजा जावेगा, तो प्रजा उत्कृष्टता को प्राप्त होगी और समाज पवित्र बनेगा।

२६. राम का राज्याभिषेक

भगवान राम ने बारह वर्ष अनुष्ठान किया। भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण और हनुमान, चारों भ्रमण करते हुए नदी तट पर राम के पास पहुंचे तथा उन्होंने राम से राज्याभिषेक का आग्रह किया। राम ने कहा दर्शनकार कहते हैं कि संसार में राष्ट्र की कोई आवश्यकता नहीं होती। जब राष्ट्र में पापाचारी और कर्तव्यहीन प्राणी अधिक से अधिक हो जाते हैं, तब राज्य सभा की आवश्यकता उनमें अनुशासन लाने के लिए नियमावली बनाने की होती है। जब प्रजा में कर्तव्यवाद और अनुशासन होता है, तो राजा का कोई महत्व नहीं होता। भरत और शत्रुघ्न ने दीपावली के बाद शुक्ल पक्ष में राष्ट्र को अपनाने का अनुरोध किया, तब राम ने अनुष्ठान को पूर्ण कर अयोध्या को गमन किया।

राम का महर्षि वशिष्ठ व विश्वामित्र से विचार-विमर्श-

राम ने वशिष्ठ, विश्वामित्र दोनों से राष्ट्र को रामराज्य बनाने का विधान पूछा, तब उन्होंने कहा तुम्हारे राष्ट्र में मिथ्यावाद नहीं होना चाहिए। राजा को मिथ्यावादी नहीं होना चाहिए। जो अपने कर्तव्य को ईश्वर के ऊपर त्याग देता है, उसका जीवन ऋणों से उपराम होता रहता है, और जिसे अभिमान आ जाता है, वह मानव सदा त्रुटियों में रमण करता है। जो मानव अपने कर्तव्य को करता हुआ प्रभु को स्मरण करता रहता है और अपने कार्यों को प्रभु के लिए त्याग देता है, उस मानव के द्वारा प्रायः सदाचार आ जाता है। राजा का प्रभु गुरु होता है परन्तु गुरु निष्पक्ष, तपस्वी, आत्मेवदना, ब्रह्मचिन्तन करने वाला, प्रभु की प्रतिभाओं को जानने वाला हो, वह राजा को सदाचार के मार्ग पर ले जाता है। भगवान राम ने भ्रमण किया और राष्ट्र में सर्वत्र संस्कृति का प्रसार किया।

राज्याभिषेक उत्सव-

भरत के अनुरोध पर राम ने दीपावली पर राज्याभिषेक की अनुमति दे दी। एक सभा की, जिसमें नाना ऋषिवर और सर्व भूमण्डल के राजा अपने अपने वैज्ञानिक यंत्रों से अयोध्या पहुंचे। पातालपुरी से मकरध्वज और लंका से विभीषण आये। अयोध्या में भव्य सभा हुई। दीपावली का दिवस आया, राम ने एक सूक्ष्म यज्ञ किया। महर्षि वशिष्ठ अध्यक्ष बने। सभा में माता अरुन्धती, महर्षि अत्रि, माता अनुसूया विराजमान थीं। सभी राजा-महाराजा एक ही पंक्ति में थे। वशिष्ठ मुनि ने अपना अपना विचार प्रकट करने को कहा। विभीषण से विचार प्रकट करने का निवेदन किया।

विभीषण का वक्तव्य-

विभीषण बोले आज हम प्रथम बार लंका से बाहर गमन कर अयोध्या में पधारे हैं। मेरी इच्छा है कि अयोध्या का राष्ट्र अपनाकर राम संसार के लिए गौरव करेंगे। उन्हीं के आदेशानुसार अपना राष्ट्रीय पद्धति का निर्माण करेगा। मेरे भाई रावण को महर्षि कुक्कट मुनि, भृगु ऋषि और महात्मा पुलस्त्य तीनों ने समझाया कि तुमने कुबेर से लंका को जीत लिया है। लंका विदुषी रही है, हर राजा ने चरित्र का सुगंधी देकर प्रजा को नवीन दर्शन दिया है। हम चाहते हैं कि तुम लंका में चरित्र और मानवता की रक्षा करना, विज्ञान का दुरुपयोग मत होने देना। एक चरित्र की शाल का निर्माण करना। रावण ने उन वाक्यों को न मानते हुए संसार को विजय किया। उसमें प्राणी बहुत दुखी थे, क्योंकि चरित्र नहीं था। अभिमान आ गया था, क्रोध बढ़ गया था, शील समाप्त हो गया था, राष्ट्रीयता नष्ट हो गयी थी। राम जैसा महापुरुष यदि राष्ट्र का नायक बनेगा, तो राष्ट्र को एक नवीन प्रकाश प्राप्त होगा, समाज पद्धति ऊंची बनेगी। मैं इनके वाक्यों का अपने जीवन में अनुसरण करूंगा, राष्ट्र के गौरव को ऊंचा बनाऊंगा।

मकरध्वज के विचार-

हनुमानपुत्र मकरध्वज ने कहा कि आज मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं आज अपने पितरों में विद्यमान हूं। राम और लक्ष्मण मेरे पितर ही हैं,

मेरे पिता तो मेरे पितर हैं ही। ऋषि मुनि तो महापितर होते हैं। हम अपने जीवन में पवित्रता को लाना चाहते हैं, इसके लिए प्रत्येक प्राणी को अपने कार्य में संलग्न रहना है। मेरी इच्छा है कि राम द्वारा अयोध्या के राष्ट्र की जो भी नियमावली निर्मित होगी, मैं उसे अपने जीवन में अपनाऊंगा। यह मेरे पिता की देन है। मैं तपस्वी बन सकता हूं। मेरे पिता सूर्य विज्ञान के ज्ञाता रहे हैं। राज्य में धर्म और मानवत्ता की रक्षा होनी चाहिए। इस प्रकार रामराज्य की स्थापना होनी चाहिए।

महाराजा शिव का उपदेश-

भगवान शिव ने कहा कि आज हमारा बड़ा सौभाग्य है कि हम आज भगवान मनु द्वारा निर्मित अयोध्या में हैं। भगवान मनु ने ही राष्ट्र पद्धति का निर्माण किया था। यह 'नवद्वारा अष्ट वक्रो' नगरी कही जाती है। यहां आज राम विद्यमान हैं, जिन्होंने मेरी और भारद्वाज की सम्मति से लंका को विजय कर, वहां आर्यत्व का प्रसार किया। आर्यत्व उसे कहते हैं, जहां मानव अपने नियम धर्म और मानवता को अपनाता है, और सत्यता को अपनाता हुआ अपने राष्ट्र की पद्धति को ऊंचा बनाता है। समुद्र तट पर मुझे जामवंत द्वारा आमंत्रित किया, मैं पार्वती सहित समुद्र तट पर पहुंचा। राम ने कहा महाराज मुझे क्या करना चाहिए।' राम नीतिज्ञ हैं। मुझे उचित आसन देकर यज्ञ किया और युद्ध हेतु मेरी सहमति प्राप्त की। रावण मेरा शिष्य था, किंतु उसने मानवता, सत्यता का प्रसार नहीं किया, अतः मैंने उसे त्याग दिया। राम तुम त्याग तपस्या में रत रहने वाले हो, अतः मैं तुम्हारे साथ हूं। मैं अपने अस्त्रों-शस्त्रों का कोष तुम्हें प्रदान करता हूं। राम ने हर्ष ध्वनि की, पूजन किया। मुझे प्रसन्न किया, लंका को विजय कर विभीषण को प्रदान किया। राम तुम अब अयोध्या को अपनाओ। अयोध्या हेतु नियमावली बनाओ, जिसका अनुकरण दूसरे राष्ट्र भी करें। वशिष्ठ जी जैसे ब्रह्मवेत्ता के संरक्षण में राष्ट्रोत्थान करो।

महर्षि विश्वामित्र का उपदेश-

विश्वामित्र ऋषि ने कहा कि हम राष्ट्रों को त्यागकर तपस्वी बनें।

राम में ऐसी शक्ति और महानता है, जो राष्ट्र का पालन कर सकता है। विश्वामित्र से याग पूर्ण कराते समय राम ने कहा था कि मैं राजा बनने पर धर्म का धर्म न जानने वाले, शिक्षाविहीन निपात्रों को शिक्षा दूंगा। राम अब तुम अपने राष्ट्र में रूढ़िवादिता को समाप्त कर, समाज, राष्ट्र को ऊंचा बनाओ।

महर्षि भारद्वाज का उपदेश-

महर्षि भारद्वाज ने कहा राम तुम्हारे राष्ट्र में विज्ञान है। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे राष्ट्र में विज्ञान का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। विज्ञान के दुरुपयोग से राष्ट्र की तपस्या चली जाती है, विवेकी पुरुष नही होते, ब्रह्मवेत्ता पुरुष नहीं होते, धर्म नाना रूढ़ियों में परिणित होकर रक्तभरी क्रान्ति ला देता है। कर्तव्यवादी प्राणी नहीं रहते, सभी अधिकार मांगते हैं। तुम्हारी राष्ट्रीय परम्परा ऊंची होनी चाहिए, विज्ञान का दुरुपयोग न हो, रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए।

माता अरुन्धती का उपदेश-

माता अरुन्धती ने कहा राष्ट्र में किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं रहनी चाहिएं रावण राज्य में सतियों के सतीत्व को हनन किया जाता था। परन्तु अयोध्या में सतियों के सतीत्व की सदा सुरक्षा रही है, सुरक्षा लाने वाले रहे हैं। तुम्हारे राष्ट्र में याग होने चाहिए। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे राज्य में देवियों का पूजन होना चाहिए, देवियों की सुरक्षा रहनी चाहिए।

ब्रह्मवेत्ता महर्षि वशिष्ठ का उपदेश-

राम का राज्याभिषेक किया गया, राजाओं ऋषियों आप सबके वाक्य सारगर्भित थे। उन वाक्यों पर अयोध्या में पालन होगा। हम प्रत्येक मानवता में अपने जीवन को उंचा बनाने के लिए सदैव तत्पर रहें।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के उद्गार-

नतमस्तक होकर राम ने कहा आज आप लोगों ने राष्ट्र का भार मुझे सौंपा है। मेरा हृदय चाहता है कि न्यायालयों में न्याय होना चाहिए, कर्तव्य का पालन होना चाहिए, समय विवेक सभा होनी चाहिए, जिसका

निर्वाचन समय-समय पर होगा।

काकभुषुण्ड जी के प्रश्नों का राम द्वारा उत्तर-

काकभुषुण्ड जी ने राम से कहा राम तुम राष्ट्र को क्यों अपनाना चाहते हो। तुम्हारा इसमें क्या स्वार्थ है, जबकि ईश्वर ने तुम्हें जीवन तपस्या के लिए दिया है। राम ने कहा राष्ट्र को उन्नत और पवित्र बनाना है, जिसके लिए विद्यार्थियों तथा उनके माता पिता में अनुशासन लाना है। प्रत्येक गृह को देवपूजा और याग से सुगन्धित बनाना है, सबको गोमध याग कराना है। मेरी माताओं और पुत्रियों में कंठ माधुर्य, कर्तव्यपरायणता और शिक्षा होनी चाहिए। समाज में विज्ञान लाऊंगा, अनुशासन, चरित्र की पवित्रता, मानवीयता लानी है। राम ने कहा 'साम्यवाद मेरा राष्ट्र होगा' जिसमें प्रत्येक प्राणी को अपने विचारों का अधिकार होगा। वह अधिकार बुद्धियुक्त और विज्ञानयुक्त होगा। वही विचार तो मानव को ऊंचा बनाते हैं, वही विचारधारा महानता में ले जाती है। मैं सब राजाओं और ऋषि-मुनियों का सेवक बनकर रहूंगा। तत्श्चात् सभा का विसर्जन हो गया।

श्रीराम की आचार संहिता-

राम ने आचार्यों की आज्ञा से राष्ट्र को अपनाया। माताओं का पूजन किया। राष्ट्र में यह घोषणा की कि एक मानव की एक ही देवी होगी, दोनों में प्रेम होगा। प्रत्येक गृह में वेदपाठ, याग होना चाहिए। प्रत्येक मानव कर्तव्य का पालन करेगा। राष्ट्र में एक-दूसरे में कुरीति नहीं आएगी। भगवान राम के राज्य की आचार संहिता का निर्माण महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, काकभुषुण्ड, लोमश, अत्रि और भारद्वाज द्वारा हुआ। आचार संहिता के अनुसार राजा भोर में आसन त्यागकर प्रात:कालीन क्रियाओं से निवृत होकर योग में परिणित होता है। तत्पश्चात् प्रजा का नेतृत्व करता है। अपने वाहनों में बैठकर प्रजा के गृहों में जाकर आचार संहिता को देखकर राष्ट्र को पवित्र बनाता है। आधुनिक काल की आचार संहिता के अनुसार उन्हें नाना सेवक संरक्षक चाहिए। राम की आचार संहिता में गृह

से वेदध्वनि तथा याग की सुगन्ध आती है, तब राष्ट्र रामराज्य कहलाता है। (17-12-64 दिल्ली)

२७. रामराज्य

राष्ट्र निर्माण-

रामराज्य का अभिप्राय, जहां प्रजा में प्रभु का स्मरण हो और जहां धर्म को जानने वाले प्राणी हों। धर्म की रक्षा हेतु राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र का निर्माण तब हुआ था, जब प्रजा में अशांति, अकर्तव्य आ गया था। महापुरुषों को उत्तम निष्ठावान जितेन्द्रिय को राजा बनना चाहिए। ऐसा हमारे दर्शनशास्त्रों और वैदिक परम्परा में है। रामराज्य में कोई कन्या दुराचारिणी नहीं थी। मार्ग में उसे भौजाई तुल्य, माता तुल्य देखने वाले होते थे। धर्मवान व्यक्ति थे। राष्ट्र में शोषण करने वाले व्यक्ति नहीं थे। भगवान राम को वशिष्ठ, विश्वामित्र और माता अरुन्धति शिक्षा देते रहते थे। कोई भी पीड़ित नहीं था।

राम की पवित्र जीवनचर्या एवं आहार-

राम पवित्र थे। वह इन्द्र से याचना करते कि मुझे वैज्ञानिक तथा देवताओं की रक्षा करने वाला बना। मैंने राष्ट्र को पवित्र बनाना है। राम कोई रक्षक नहीं रखते थे। रात्रि में निर्भय भ्रमण कर प्रजा का दुख दर्द देखते, दिन में न्याय करते थे। राम अपने जीवन में सात्विक आहार लेते थे। भोजन करते केवल कन्दमूल का आहार करते, तपस्या काल में वनस्पतियों के रसों का पान कर, मन और प्राण को तपोमय बनाकर उन्होंने बारह-बारह वर्ष के अनुष्ठान किये। कामधेनु का दुग्ध पात्र कर तप करते रहे।

राम की अयोध्यावासियों से अपेक्षा-

राम ने अयोध्यावासियों से कहा यदि मुझे अयोध्या का नरेश बनाना चाहते हो, तो तुम्हें अपने में सदाचार, मानवता और वेद की प्रतिभा को अपनाना होगा। भील, द्रविरा आदि को अपनाकर अयोध्या को ऊंचा

बनाना होगा। प्रजा ने स्वीकार किया। राष्ट्र में जागरूकता और पवित्रता आयी।

रामराज्य की नियमावली-

राम के यहां प्रातः यज्ञ होता था। याग में उपदेश मंजरियां चलती थीं। यज्ञ होने चाहिए, विचारों की सुगन्धि होनी चाहिए। ये दोनों ही राष्ट्र और समाज को ऊंचा बना सकते हैं। सदाचार और मानवता होनी चाहिए। किसी प्राणी की हिंसा नहीं होनी चाहिए। अहिंसा परमोधर्म राम के काल में माता-पिता से पुत्र का हनन (मृत्यु) नहीं होता था।

अकाल निवारण हेतु राम द्वारा वाजपेयी याग-

अयोध्या में जल प्लावन से अकाल पड़ गया। राम और सीता ने माता अरुन्धती और वशिष्ठ जी से अकाल निवारण हेतु निवेदन किया। महर्षि वशिष्ठ द्वारा अग्निष्टोम याग को त्याग कर वाजपेयी याग किया गया। राम और सीता ने पन्द्रह दिन तप करने से मेघ समाप्त हो गये। उनका क्रियाकलाप स्वाहा के साथ द्यौलोक में चला गया।

ऋषियों के प्रेरणा से अयोध्या में राष्ट्रीय याग कदली वनों में ऋषियों की सभा हुई, जिसके अनुसार महर्षि विभाण्डक, शमीक, शौनक, महर्षि सुकेतकेतु और दालभ्य पांचों ने राम से याग करने को कहा। याग प्रारम्भ हुआ। राम ने याग का अंतरिक्ष में परिणाम जानना चाहा। भारद्वाज महाराज ने राम को अंतरिक्ष में याग का दर्शन कराया। यह याग छः माह चला, तब पूर्णाहुति हुई। राम ने राजसूय यज्ञ किया।

२८. महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में सीता

सीता को आश्रम में छोड़ने का कारण-

माता सीता का जीवन बड़ा तपस्यामय रहा। उन्होंने अपने जीवन में चरित्र और मानवीयता की रक्षा की। उनके जीवन में कौतुक होता रहा। जब अयोध्या में आ गयी, तो माता के गर्भस्थल में जब गर्भ की आवृत्तियां प्राप्त हो गयीं, तो राम ने लक्ष्मण से सीता को बाल्मीकि आश्रम

में त्यागने को कहा, क्योंकि वहां नदी तट है, उसी पर पत्नी स्वच्छ वायुमण्डल में बालक को जन्म देगी, तो राष्ट्र का कल्याण होगा। तब गृह में तपस्वी बालक का जन्म होगा। बाल्मीकि आयुर्वेद के विद्वान, औषधि विज्ञान के मर्मज्ञ थे। बालक को जन्म होते ही 'स्वर्णका मुद्रा मधु' सेमकृतिमा और अमृता चार चीजों का रस रसना पर स्पर्श कराना चाहिए, जिससे उसके दोष समाप्त हो जाएं। बाल्मीकि तपस्वी थे, गायत्री के ऋषि थे और आयुर्वेद के महापंडित भी थे। अतः राम ने सीता को बालक के स्वर्णिम स्वास्थ्य हेतु बाल्मीकि आश्रम में भेजा था। सीता प्रातःकालीन याग करती थी, जिससे वायुमण्डल पवित्र होता है।

लव-कुश का जन्म-

बाल्मीकि आश्रम में सीता के गर्भ से एक बालक का जन्म हुआ। ऋषि उस बालक को प्रेम से लव कहने लगे, परन्तु कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि ऋषि सुरंधित की कन्या, जिसका नाम सुमित्रा था, एक वृहित नाम के ब्रह्मचारी सुरंधित ऋषि के आश्रम में आये और सुमित्रा से दृष्टिपात हुआ। वह अग्रहि हो गयी। पिता से कहा कि भगवन 'मम हृदयश्चय' वह कन्या गायत्री पाठ भी करती थी। कुछ समय बाद उसके बालक हुआ। वह उस बालक को कुशा पर स्थिर कर, बाल्मीकि आश्रम के निकट छोड़ अपने ऋषि स्थान पर चली गयी। जब सीता पवित्र जल पान करने गयीं, तो उन्हें यह बालक प्राप्त हो गया। सीता ने उस बालक को अपने कंठ लगाया। ऋषि बाल्मीकि ने दशरथ से लेकर राम के जीवन चरित्र का निर्माण किया और जीवन चरित्र तथा कर्मों की एक पोथी की रचना की। लव और कुश दोनों माता के पुत्र कहलाये। ये दोनों बाल्मीकि की सेवा करते तथा ऋषि उन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा देते। कुछ समय बाद राम को विदित हुआ। नाना संग्राम भी उनके और उनके पुत्रों के द्वारा हुए।

लव-कुश की शिक्षा-

माता सीता आयुर्वेद तथा धनुर्विद्या की ज्ञाता थीं। वेद में माता को

पृथा कहा है। माता सीता अपने पुत्रों को धनुर्विद्या प्रदान करती हैं। प्रातःकाल यज्ञ करना, देवपूजा करना, ब्रह्मा का चिन्तन करना, शिक्षा देने का कार्य कर रही हैं। महर्षि बाल्मीकि ब्रह्मविद्या और आयुर्वेदपरायण थे। सीता प्रातःकालीन याग करतीं, याग में अपने जीवन को आहूत करतीं, वायुमण्डल को पवित्र करतीं।

२९. अश्वमेध याग

लव-कुश और सीता का अयोध्या आगमन-

महाराजा राम ने अश्वमेध याग किया। अश्वमेध अश्व को छोड़ा गया। लव कुश ने उसको अंकित किया। माता सीता ने उनसे कहा भगवान राम तुम्हारे पिता और मेरे स्वामी (पति) हैं। हनुमान और लक्ष्मण दोनों बाल्मीकि आश्रम आये तथा माता सीता से प्रार्थना की कि हे मां तू राष्ट्रगृह में चल। तू राजलक्ष्मी है। हमारा उद्देश्य पूर्ण हुआ। माता सीता ने यह वाक्य स्वीकार कर लिया। महामंत्री हनुमान और वे दोनों बालक गमन करते हुए अयोध्या में आये। अयोध्या में आकर सीता ने राम के चरणों को स्पर्श किया और वहां राजेश्वरी याग (अश्वमेध यज्ञ) हुआ। उस याग में राम और सीता दोनों यजमान बने, और यज्ञ पूर्ण हुआ। माता सीता ने कहा आचार्य कुल में पुत्रेष्टि यज्ञ भी पूर्ण कर लिया। अब मुझे यह भान हो रहा है कि आज से सातवें दिन मेरी मृत्यु हो जाएगी।

प्राणायाम से शरीर का परित्याग-

माता सीता ने याग की पूर्ण आहुति के सातवें दिन शरीर को त्यागा। उसके सातवें दिन राम ने भी शरीर को त्याग दिया। तृतीय दिवस लक्ष्मण ने त्यागा। बारी बारी से पांचों ने शरीर को त्यागा। विचार-विनिमय यह है कि सीता पृथ्वी में समाहित नहीं हुई। उन्होंने शरीर को स्थूलता से त्यागा। प्राणायाम द्वारा त्यागा, क्योंकि वे तो सर्वधर्मात्मा पुरुष थे, पृथ्वी में समाहित होना आत्महत्या मानी जाती है, और शास्त्रों में आत्महत्या पाप मानी जाती है। वे पाप कर्म क्यों करते? जब उन्होंने कोई अपराध नहीं

किया था। भगवान राम ने अपने जीवन में अयोध्या में पांच अश्वमेध यज्ञ कराये। राजा रावण ने अपने राष्ट्र में इक्कीस अश्वमेध यज्ञ कराये थे। नाम उच्चारण के बजाय उनके गुणों को धारण करे, उत्थान कर ज्ञान विज्ञान की प्रगति करे।

३०. राम के जीवन से शिक्षा

भगवान राम ने वशिष्ठ मुनि से अपनी संस्कृति और मानवता प्रसार करने को कहा था। वशिष्ठ जी ने जो अभी उपदेश दिये, राम ने भील, द्रविणों की सेना बनायी, पवनपुत्र हनुमान को अपनाया, बाली के यहां अपनी संस्कृति का प्रसार किया, सुग्रीव को अपनाकर रावण से संग्राम किया, उनके आदर्शों का अनुकरण कर, अपना तथा राष्ट्र का उत्थान करना चाहिए।

प्रत्येक युग में महान आत्मा-

बाल्मीकि के अनुसार हर युग में मर्यादा का ऐसा महान व्यक्ति उत्पन्न होता है। उनकी महानता से उनको राजा राम कहा जाता है, महाराजा कृष्ण कहा जाता है। जो महान व्यक्ति अपनी धार्मिकता से मन को विदेह कर लेता है, वह व्यक्ति उस राज्य का राजा जनक चुना जाता है। इसी प्रकार इन्द्र की उपाधि है, जो एक सौ एक अश्वमेध यज्ञ कर लेता है, उसे महान इन्द्र की उपाधि प्राप्त हो जाती है। हर महान चतुर्युगी में ऐसा माना गया कि प्रत्येक चतुर्युगी में ऐसी महान आत्मा आकर के परमात्मा की विभूतियां देकर के संसार को मर्यादा में बांध करके वह संसार से अपना पुनः उत्थान करके चला जाता है।

□□□